MATS UNIVERSITY

MATS CENTRE FOR OPEN & DISTANCE EDUCATION

NAAC GRADE A+ ACCREDITED UNIVERSITY

मैट्स विश्वविद्यालय

मैट्स मुक्त एवं दूरवर्ती शिक्षा केंद्र

छत्तीसगढ़ में पर्यटन

बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

SELF LEARNING MATERIAL

SELF LEARNING MATERIAL

COURSE DEVELOPMENT EXPERT COMMITTEE

1- Prof.(Dr.) Reshma Ansari, HOD Hindi Department , MATS University Raipur Chhattisgarh
2- Dr. Sudhir Sharma , Subject Expert ,HOD Hindi Department, Kalyan College, Bhilai
3- Dr. Kamlesh Gogia Associate Professor, MATS University ,Raipur, Chhattisgarh
4- Dr. Sunita Shashikant Tiwari Associate Professor, MATS University Raipur Chhattisgarh
5- Dr. Rajesh Kumar Dubey , Subject Expert, Principal , Shahid Rajeev Pandey Government College ,Bhatagaon , Raipur ,Chhattisgarh

COURSE COORDINATOR

Prof.(Dr.) Kamlesh Gogiya, Hindi Department , MATS University Raipur Chhattisgarh

COURSE /BLOCK PREPARATION

(Dr.) Suparna Shrivastava, Asso. Prof. Hindi Department , MATS University Raipur Chhattisgarh

March, 2025

@MATS Centre for Distance and Online Education, MATS University, Village- Gullu, Aarang, Raipur-(Chhattisgarh)

All rights reserved. No part of this work may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from MATS University, Village- Gullu, Aarang, Raipur-(Chhattisgarh)

Printed & Published on behalf of MATS University, Village-Gullu, Aarang, Raipur by Mr. Meghanadhudu Katabathuni, Facilities & Operations, MATS University, Raipur (C.G.)

Disclaimer-Publisher of this printing material is not responsible for any error or dispute from contents of this course material, this is completely depends on AUTHOR’S MANUSCRIPT.
Printed at: The Digital Press, Krishna Complex, Raipur-492001(Chhattisgarh)

अनुक्रमणिका

माड्यूल	विषय – छत्तीसगढ़ में पर्यटन – I	
माड्यूल – 1	**छत्तीसगढ़ का सामान्य परिचय** इकाई – 1 सामान्य परिचय	1-2
	इकाई – 2 भौगोलिक इतिहास	3-6
	इकाई – 3 संक्षिप्त जानकारी	7-10
माड्यूल – 2	**छत्तीसगढ़ के प्रमुख पर्यटन स्थल** इकाई– 4 पुरातात्विक	11-14
	इकाई– 5 ऐतिहासिक	15-18
	इकाई – 6 धार्मिक	19-21
माड्यूल – 3	**छत्तीसगढ़ के प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान** इकाई– 7 राष्ट्रीय उद्यान की जानकारी	22-27 22-25
	इकाई– 8 अभ्यारण्यँ	26-27
	इकाई– 9 प्रमुख नदिया	28-30
	इकाई– 10 जल प्रपात	31-38
माड्यूल – 4	**छत्तीसगढ़ का पर्यटन मण्डल** इकाई – 11 कार्य	39-40
	इकाई – 12 उपलब्धियाँ	41-42
	इकाई – 13 रामगमन पथ	43-44
	इकाई – 14 महत्व	45-46

Acknowledgement

The Material (Pictures and images) we have used is purely for educational purpose. Every effort has been made to trace the copyright holders of material reproduced in this book. Sould any infringement have occurred, the publishers and editors apologize and will be pleased to make the necessary corrections in future of this book.

इकाई –1

छत्तीसगढ़ का सामान्य परिचय

- राज्य प्रतीक चिह दृ 36 गढ़ों (किलों) के मध्य सुरक्षित, गोलाकार चिह्न, जिसके बीच में भारत का प्रतीक अषोक स्तम्भ है। साथ में आदर्ष वाक्य सत्यमेव जयते, राज्य की मुख्य फसल धान की सुनहली बालियां, ऊर्जा के प्रतीकों के बीच राश्ट्रध्वज के तीन रंगों के साथ छत्तीसगढ़ की नदियों को दर्षाती लहरें बनी हुई है।

- स्थापना दिवस : 1 नवंबर, 2000 (26 वां राज्य)
- राजधानी : रायपुर (अटल नगर प्रस्तावित)
- राजभाशा : हिन्दी
- राजकीय वष्क्ष : साल
- राजकीय पषु : बनभैंसा
- राजकीय पक्षी : पहाड़ी मैना
- राजकीय ध्येय वाक्य : 'सत्य तथा पारदर्षिता'

छत्तीसगढ़ की भौगोलिक संरचना

• अवस्थिति दृ राज्य 17°462 उत्तरी अक्षांष से लेकर 24°52 उत्तरी अक्षांष तक तथा 80–152 पूर्वी देषान्तर से लेकर 84°202 पूर्वी देषान्तर रेखाओं के मध्य स्थित है।

• क्षेत्रफल दृ 136,194 वर्ग किलोमीटर है (आंकड़ेः छत्तीसगढ़ सरकार की आधिकारिक वेबसाइट से)

• कुल भौगोलिक क्षेत्रफल की दृश्टि से देष का राज्य है दृ 10वाँ

• भारतीय संघ में राज्य का स्थान दृ 26

• भौगोलिक सीमा स्पर्ष करती है दृ 7 राज्यों (झारखण्ड, उत्तर प्रदेष, ओडिषा, मध्य प्रदेष, महाराश्ट्र, आन्ध्र प्रदेष तथा तेलंगाना) की सीमाओं को

- उत्तर–दक्षिण लम्बाई दृ 360 किमी
- पूर्व–पष्चिम चौड़ाई दृ 140 किमी
- सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला दृ रायपुर
- न्यूनतम जनसंख्या वाला जिला दृ नारायणपुर

Notes

- प्राकृतिक विभाजन दृ पहाड़ी प्रदेष, पठारी प्रदेष, पाट प्रदेष, मैदानी प्रवेष
- जलवायु दृ उश्ण कटिबंधीय मानसूनी जलवायु

राज्य की आकृति दृ समुद्री घोड़े के समान

छत्तीसगढ़ की प्रषासनिक एवं राजनीतिक संरचना

- जिलों की संख्या : 27 (गौरला–पेण्ड्रा मरवाही को 28वां जिला बनाने की घोशणा)
- संभाग : 5
- नगर निगम : 13 (रिसाली प्रदेष का 14वां नगर निगम प्रस्तावित)
- जिला पंचायत : 27
- विधान मण्डल : एक सदनात्मक
- विधानसभा सदस्यों की संख्या : 91 (इसमें एक एंग्लोइंडियन सदस्य भी सम्मिलित है)
- लोकसभा सदस्यों की संख्या : 11
- राज्यसभा सदस्यों की संख्या : 05
- उच्च न्यायालय : बिलासपुर
- राज्य के लोकसभा की 11 सीटों में से दृ 1 अनुसूचित जाति और 4 अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित रखा गया है।
- राज्य की विधानसभा भवन का नाम रखा गया है : मिनिमाता के नाम पर
- राज्य विधानसभा अध्यक्ष के आवास का नाम है दृ संवेदना
- राज्य के मुख्यमंत्री के आवास का नाम दृ करुणा
- राज्य का पुलिस मुख्यालय दृ रायपुर में
- राज्य की पुलिस का आदर्ष वाक्य दृ परित्राणाय साधुनाम
- राज्य में पुलिस प्रषिक्षण अकादमी की स्थापना की गई है दृ रायपुर जिले के चन्द्रखुरी नामक स्थान पर।
- केन्द्रीय जेल स्थित है दृ रायपुर, बिलासपुर, जगदलपुर, दुर्ग एवं अम्बिकापुर
- राज्य की एकमात्र खुली जेल स्थित है दृ बस्तर जिले के मसगांव में

छत्तीसगढ़ भारत का एक राज्य है। इसका गठन १ नवंबर २००० को हुआ था और यह भारत का २६वाँ राज्य है। पहले यह मध्य प्रदेष के अंतर्गत था। कहते हैं कि किसी समय इस क्षेत्र में 36 गढ़ थे, इसीलिये इसका नाम छत्तीसगढ़ पड़ा। किंतु गढ़ों की संख्या में वर्षद्धि हो जाने पर भी नाम में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, छत्तीसगढ़ भारत का ऐसा राज्य है जिसे 'महतारी'(माँ) का दर्जा दिया गया है।ख6,भारत में दो क्षेत्र ऐसे हैं जिनका नाम विषेश कारणों से बदल गया – एक तो 'मगध' जो बौद्ध विहारों की अधिकता के कारण ''बिहार'' बन गया और दूसरा 'दक्षिण कौषल' जो छत्तीस गढ़ों को अपने में समाहित रखने के कारण ''छत्तीसगढ़'' बन गया। किन्तु ये दोनों ही क्षेत्र अत्यन्त प्राचीन काल से ही भारत को गौरवान्वित करते रहे हैं। ''छत्तीसगढ़'' तो वैदिक और पौराणिक काल से ही विभिन्न संस्कृतियों के विकास का केंद्र रहा है। यहाँ के प्राचीन मंदिर तथा उनके भग्नावषेश इंगित करते हैं कि यहाँ पर वैशणव, षैव, षाक्त, बौद्ध संस्कृतियों का विभिन्न कालों में प्रभाव रहा है। एक संसाधन संपन्न राज्य, यह देष के लिए बिजली और इस्पात का एक स्रोत है, जिसका उत्पादन कुल स्टील का 15ः है। ,छत्तीसगढ़ भारत में सबसे तेजी से विकसित राज्यों में से एक है।,

नामोत्पत्ति

''छत्तीसगढ़'' एक प्राचीन नाम नहीं है, इस नाम का प्रचलन १८ सदी के दौरान मराठा काल में षुरू हुआ। प्राचीन काल में छत्तीसगढ़ ''दक्षिण कोषल'' के नाम से जाना जाता था।

सभी ऐतिहासिक षिलालेख, साहित्यिक और विदेषी यात्रियों के लेखों में, इस क्षेत्र को दक्षिण कोषल कहा गया है। आधिकारिक दस्तावेज में ''छत्तीसगढ़'' का प्रथम प्रयोग १७६५ में हुआ था। ख9,

छत्तीसगढ़ षब्द की व्युत्पत्ति को लेकर इतिहासकारों में कोई एक मत नहीं है। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि कलचुरी काल में छत्तीसगढ़ आधिकारिक रूप से ३६ गढ़ों में बँटा था, यह गढ़ एक आधिकारिक इकाई थी, ना कि किले या दुर्ग। इन्हीं ''३६ गढ़ों'' के आधार पर छत्तीसगढ़ नाम की व्युत्पत्ति हुई। (१ गढ़ = ७ बरहो = ८४ ग्राम)

इतिहास

मुख्य लेखः रामायणकालीन छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ प्राचीनकाल के दक्षिण कौषल का एक हिस्सा है और इसका इतिहास पौराणिक काल तक पीछे की ओर चला जाता है। पौराणिक काल का 'कोषल' प्रदेष, कालांतर में 'उत्तर कोषल' और 'दक्षिण कोषल' नाम से दो भागों में विभक्त हो गया था इसी का 'दक्षिण कोषल' वर्तमान छत्तीसगढ़ कहलाता है। इस क्षेत्र के महानदी (जिसका नाम उस काल में 'चित्रोत्पला' था) का मत्स्य पुराणख्क,, महाभारतख्ख, के भीश्म पर्व तथा ब्रह्म पुराणख्ग, के भारतवर्श वर्णन प्रकरण में उल्लेख है। वाल्मीकि रामायण में भी छत्तीसगढ़ के बीहड़ वनों तथा महानदी का स्पश्ट विवरण है। छत्तीसगढ़ के धमतरी जिला में स्थित सिहावा पर्वत के

आश्रम में निवास करने वाले श्रंषी ऋशि ने ही अयोध्या में राजा दषरथ के यहाँ पुर्त्येश्टि यज्ञ करवाया था जिससे कि तीनों भाइयों सहित भगवान श्री राम का पष्थ्वी पर अवतार हुआ। राम के काल में यहाँ के वनों में ऋशि–मुनि–तपस्वी आश्रम बना कर निवास करते थे और अपने वनवास की अवधि में राम यहाँ आये थे।

सरगुजा छत्तीसगढ़ का जिला मौर्य और नंद काल के सिक्कों की खोज के लिए उल्लेखनीय है। नंद–मौर्य युग के कुछ सोने और चांदी के सिक्के, समीपवर्ती काल के अकलतरा और ठठारी से प्राप्त हुए।ख10,

इतिहास में इसके प्राचीनतम उल्लेख सन 639 ई. में प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा विवरण में मिलते हैं। उनकी यात्रा विवरण में लिखा है कि दक्षिण–कौसल की राजधानी सिरपुर थी। बौद्ध धर्म की महायान षाखा के संस्थापक बोधिसत्व नागार्जुन का आश्रम सिरपुर (श्रीपुर) में ही था। इस समय छत्तीसगढ़ पर सातवाहन वंष की एक षाखा का षासन था। महाकवि कालिदास का जन्म भी छत्तीसगढ़ में हुआ माना जाता है। प्राचीन काल में दक्षिण–कौसल के नाम से प्रसिद्ध इस प्रदेष में मौर्यों, सातवाहनों, वकाटकों, गुप्तों, राजर्शितुल्य कुल, षरभपुरीय वंषों, सोमवंषियों, नल वंषियों, कलचुरियों का षासन था। छत्तीसगढ़ में क्षेत्रीय राजवंषो का षासन भी कई जगहों पर मौजूद था। क्षेत्रिय राजवंषों में प्रमुख थेः बस्तर के नल और नाग वंष, कांकेर के सोमवंषी और कवर्धा के फणि–नाग वंषी। बिलासपुर जिले के पास स्थित कवर्धा रियासत में चौरा नाम का एक मंदिर है जिसे लोग मंडवा–महल भी कहा जाता है। इस मंदिर में सन् 1349 ई. का एक षिलालेख है जिसमें नाग वंष के राजाओं की वंषावली दी गयी है। नाग वंष के राजा रामचंद्र ने यह लेख खुदवाया था। इस वंष के प्रथम राजा अहिराज कहे जाते हैं। भोरमदेव के क्षेत्र पर इस नागवंष का राजत्व 14 वीं सदी तक कायम रहा।

अर्थव्यवस्था

छत्तीसगढ़ का नाममात्र सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) 2023–24 में [1] 5.09 लाख करोड़ (यूएस+58 बिलियन) होने का अनुमान है, जो भारत में 17वीं सबसे बड़ी राज्य अर्थव्यवस्था है। छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था ने 2023–24 में 11.2ः की वषद्धि दर दर्ज की।ख11,उच्च विकास दर हासिल करने में छत्तीसगढ़ की सफलता के कारक कृशि और औद्योगिक उत्पादन में वषद्धि हैं।

कृशि

कृशि को राज्य का मुख्य आर्थिक व्यवसाय माना जाता है। एक सरकारी अनुमान के अनुसार, राज्य का षुद्ध बोया गया क्षेत्र 4.828 मिलियन हेक्टेयर और सकल बोया गया क्षेत्र 5.788 मिलियन हेक्टेयर है।

भूगोल

छत्तीसगढ़ के उत्तर में उत्तर प्रदेष और उत्तर–पष्चिम में मध्यप्रदेष का षहडोल संभाग, उत्तर–पूर्व में उड़ीसा और झारखंड, दक्षिण में तेलंगाना, आंध्रप्रदेष और पष्चिम में महाराष्ट्र

राज्य स्थित हैं। यह प्रदेष ऊँची नीची पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ घने जंगलों वाला राज्य है। यहाँ साल, सागौन, साजा और बीजा और बाँस के वृक्षों की अधिकता है। यहाँ सबसे ज्यादा मिस्रित वन पाया जाता है। सागौन की कुछ उन्नत किस्म भी छत्तीसगढ़ के वनों में पायी जाती है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र के बीच में महानदी और उसकी सहायक नदियाँ एक विषाल और उपजाऊ मैदान का निर्माण करती हैं, जो लगभग 80 किमी चौड़ा और 322 किमी लंबा है। समुद्र सतह से यह मैदान करीब 300 मीटर ऊँचा है। इस मैदान के पष्चिम में महानदी तथा षिवनाथ का दोआब है। इस मैदानी क्षेत्र के भीतर हैं रायपुर, दुर्ग और बिलासपुर जिले के दक्षिणी भाग। धान की भरपूर पैदावार के कारण इसे धान का कटोरा भी कहा जाता है। मैदानी क्षेत्र के उत्तर में है मैकल पर्वत षृंखला। सरगुजा की उच्चतम भूमि ईषान कोण में है। पूर्व में उड़ीसा की छोटी–बड़ी पहाड़ियाँ हैं और आग्नेय में सिहावा के पर्वत षृंग है। दक्षिण में बस्तर भी गिरि–मालाओं से भरा हुआ है। छत्तीसगढ़ के तीन प्राकृतिक खण्ड हैं: उत्तर में सतपुड़ा, मध्य में महानदी और उसकी सहायक नदियों का मैदानी क्षेत्र और दक्षिण में बस्तर का पठार। राज्य की प्रमुख नदियाँ हैं – महानदी, षिवनाथ, खारुन, सोंढूर, अरपा, पैरी तथा इंद्रावती नदी।ख13,

छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण

1. 2 नवंबर 1861 को मध्य प्रांत का गठन हआ, इसकी राजधानी नागपुर थी। मध्यप्रांत में छत्तीसगढ़ एक जिला था।

2. 1862 में मध्य प्रांत में पाँच संभाग बनाये गये जिसमें छत्तीसगढ़ एक स्वतंत्र संभाग बना, जिसका मुख्यालय रायपुर था, जिसके साथ ही छत्तीसगढ़ में 3 जिलों (रायपुर, बिलासपुर, संबलपुर) का निर्माण भी हुआ।

3. सन् 1905 में जषपुर, सरगुजा, उदयपुर, चांगभखार एवं कोरिया रियासतों को छत्तीसगढ़ में मिलाया गया तथा संबलपुर को बंगाल प्रांत में मिलाया गया। इसी वर्श छत्तीसगढ़ का प्रथम मानचित्र बनाया गया।

4. सन् 1918 में पंडित सुंदरलाल षर्मा ने छत्तीसगढ़ राज्य का स्पश्ट रेखा चित्र अपनी पांडुलिपि में खींचा अतः इन्हें छत्तीसगढ़ का प्रथम स्वप्नदृश्टा व संकल्पनाकार कहा जाता है।

5. सन् 1924 में रायपुर जिला परिशद ने संकल्प पारित करके पष्थक छत्तीसगढ़ राज्य की माँग की।

6. सन् 1939 में कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेषन में पंडित सुंदरलाल षर्मा ने पृथक छत्तीसगढ़ की माँग रखी।

7. सन् 1946 में ठाकुर प्यारेलाल ने पष्थक छत्तीसगढ़ माँग के लिए छत्तीसगढ़ षोशण विरोध मंच का गठन किया जो कि छत्तीसगढ़ निर्माण हेतु प्रथम संगठन था।

8. सन् 1947 स्वतंत्रता प्राप्ति के समय छत्तीसगढ़ मध्यप्रांत और बरार का हिस्सा था।

Notes

9. सन् 1953 में फजल अली की अध्यक्षता में भाशायी आधार पर राज्य पुनर्गठन आयोग के समक्ष पष्थक राज्य की माँग की गई।

10. सन् 1955 रायपुर के विधायक ठाकुर रामकृश्ण सिंह ने मध्य प्रांत के विधानसभा में पष्थक छत्तीसगढ़ की माँग रखी जो की प्रथम विधायी प्रयास था।

11. सन् 1956 में डॉ. खूबचंद बघेल की अध्यक्षता में छत्तीसगढ़ महासभा का गठन राजनांदगाँव जिले में किया गया। इसके महासचिव दषरथ चौबे थे। इसी वर्श मध्यप्रदेष के गठन के साथ छत्तीसगढ़ को मध्यप्रदेष में षामिल किया गया।

12. सन् 1967 में डॉक्टर खूबचंद बघेल ने बैरिस्टर छेदीलाल की सहायता से राजनांदगाँव में पष्थक छत्तीसगढ़ हेतु छत्तीसगढ़ भातष्व संघ का गठन किया जिसके उपाध्यक्ष द्वारिका प्रसाद तिवारी थे।

13. सन् 1976 में षंकर गुहा नियोगी ने पृथक छत्तीसगढ़ हेतु छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा का गठन किया।

14. सन् 1983 में षंकर गुहा नियोगी के द्वारा छत्तीसगढ़ संग्राम मंच का गठन किया गया। पवन दीवान द्वारा पृथक छत्तीसगढ़ पार्टी का गठन किया गया।

15. सन् 1994 में तत्कालीन साजा विधायक रविंद्र चौबे ने मध्य प्रदेष विधानसभा में छत्तीसगढ़ निर्माण संबंधी अषासकीय संकल्प प्रस्तुत किया गया जो सर्वसम्मति से पारित हुआ।

16. 1 मई 1998 को मध्यप्रदेष विधान सभा में छत्तीसगढ़ निर्माण के लिए षासकीय संकल्प पारित किया गया।

17. 25 जुलाई 2000 को श्री लालकृश्ण आडवाणी द्वारा लोकसभा में विधेयक प्रस्तुत किया गया। 31 जुलाई 2000 विधेयक लोकसभा में पारित किया गया। 3 अगस्त 2000 राज्यसभा में विधेयक प्रस्तुत किया गया और 9 अगस्त 2000 को राज्यसभा में पारित किया गया। इसे 25 अगस्त 2000 तत्कालीन राश्ट्रपति के आर नारायण ने मध्ग्रपदेष राज्य पुर्नगठन अधि ानियम का अनुमोदित किया।

18. 1 नवंबर 2000 भारतीय संविधान के अनुच्छेद 3 के तहत छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना हुई, छत्तीसगढ़ देष का 26वाँ राज्य बना।

19. छत्तीसगढ़ का निर्माण मध्यप्रदेष के तीन संभाग रायपुर, बिलासपुर एवं बस्तर के 16 जिलों, 96 तहसीलों और 146 विकासखंडों से किया गया। प्रदेष की राजधानी रायपुर को बनाया गया तथा बिलासपुर में उच्च न्यायालय की स्थापना की गई।

20. छत्तीसगढ़ में विधानसभा की प्रथम बैठक 14 दिसंबर 2000 से 20 दिसंबर 2000 तक रायपुर में राजकुमार कॉलेज के जषपुर हाल में हुई।

जिले

मुख्य लेखः छत्तीसगढ़ के जिले

छत्तीसगढ़ राज्य गठन के समय यहाँ सिर्फ 16 जिले थे, पर 2007 में 2 नए जिलो की घोशणा की गयी जो कि बस्तर संभाग का नारायणपुर व बीजापुर था। 2012 में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह (भाजपा) ने 9 नये जिलों का निर्माण किया। 15 अगस्त 2019 को छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेष बघेल (कांग्रेस) ने बिलासपुर जिले से काट कर 1 नए जिले (गौरेला पेंड्रा मरवाही) के निर्माण की घोशणा की। भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री बघेल द्वारा और नये 04 जिले का घोशणा किया है इस तरह अब छत्तीसगढ़ में कुल 32 जिले हो गए हैं।

• कवर्धा जिला • कांकेर जिला (उत्तर बस्तर) • कोरबा जिला • कोरिया जिला • जषपुर जिला • जांजगीर—चाँपा जिला • दंतेवाड़ा जिला (दक्षिण बस्तर) • दुर्ग जिला • धमतरी जिला • बिलासपुर जिला • बस्तर जिला • महासमुंद जिला • राजनांदगाँव जिला • रायगढ़ जिला • रायपुर जिला • सरगुजा जिला • नारायणपुर जिला • बीजापुर जिला • बेमेतरा जिला • बालोद जिला • बलौदा बाजार जिला • बलरामपुर • गरियाबंद • सूरजपुर • कोंडागाँव जिला • मुंगेली जिला • सुकमा जिला • गौरेला—पेंड्रा—मारवाही जिला • मनेंद्रगढ़ जिला • सारंगढ़—बिलाईगढ़ जिला • मोहला—मानपुर जिला • सक्ती जिला • खैरागढ़ जिला

कला एवं संस्कृति

आदिवासी कला काफी पुरानी है। प्रदेष की आधिकारिक भाषा हिंदी है और लगभग संपूर्ण जनसंख्या उसका प्रयोग करती है। प्रदेष की आदिवासी जनसंख्या हिंदी की एक उपभाशा छत्तीसगढ़ी बोलती है।

महुआ सल्फी से तैयार प्रसिद्द बस्तर बीयर छत्तीसगढ़ में तेंदू पत्ता एकत्रण

साहित्य

मुख्य लेखः छत्तीसगढ़ी साहित्य और छत्तीसगढ़ के प्रमुख साहित्यकार

छत्तीसगढ़ साहित्यिक परंपरा के परिप्रेक्ष्य में अति समष्द्ध प्रदेष है। इस जनपद का लेखन हिंदी साहित्य के सुनहरे पष्ठों को पुरातन समय से सजाता—सँवारता रहा है।ख14, छत्तीसगढ़ी और अवधी दोनों का जन्म अर्धमागधी के गर्भ से आज से लगभग 1080 वर्श पूर्व नवीं—दसवीं षताब्दी में हुआ था।''ख15, भाशा साहित्य पर और साहित्य भाशा पर अवलंबित होते है। इसीलिये भाशा और साहित्य साथ—साथ पनपते है। परंतु हम देखते है कि छत्तीसगढ़ी लिखित साहित्य के विकास अतीत में स्पश्ट रूप में नहीं हुई है। अनेक लेखकों का मत है कि इसका कारण यह है कि अतीत में यहाँ के लेखकों ने संस्कृत भाशा को लेखन का माध्यम बनाया और छत्तीसगढ़ी के प्रति जरा उदासीन रहे। इसीलिए छत्तीसगढ़ी भाशा में जो साहित्य रचा गया, वह करीब एक हजार साल से हुआ है।

Notes

अनेक साहित्यको ने इस एक हजार वर्श को इस प्रकार विभाजित किया है :

- छत्तीसगढ़ी गाथा युग – सन् 1000 से 1500 ई. तक
- छत्तीसगढ़ी भक्ति युग – मध्य काल, सन् 1500 से 1900 ई. तक
- छत्तीसगढ़ी आधुनिक युग – सन् 1900 से आज तक

यह विभाजन किसी प्रवष्त्ति की सापेक्षिक अधिकता को देखकर किया गया है। एक और उल्लेखनीय बत यह है कि दूसरे आर्यभाशाओं के जैसे छत्तीसगढ़ी में भी मध्ययुग तक सिर्फ पद्यात्मक रचनाएँ हुई है।

लोकगीत और लोकनष्त्य

छत्तीसगढ़ के लोकगीत और लोकनष्त्य

छत्तीसगढ़ की संस्कृति में गीत एवं नष्त्य का बहुत महत्त्व है। यहाँ के लोकगीतों में विविध ाता है। गीत आकार में अमूमन छोटे और गेय होते है एवं गीतों का प्राणतत्व है दृ भाव प्रवणता। छत्तीसगढ़ के प्रमुख और लोकप्रिय गीतों में से कुछ हैंः भोजली, पंडवानी, जस गीत, भरथरी लोकगाथा, बाँस गीत, गऊरा गऊरी गीत, सुआ गीत, देवार गीत, करमा, ददरिया, डंडा, फाग, चनौनी, राउत गीत और पंथी गीत। इनमें से सुआ, करमा, डंडा व पंथी गीत नाच के साथ गाये जाते हैं।

खेल

छत्तीसगढ़ी बाल खेलों में अटकन–बटकन लोकप्रिय सामूहिक खेल है। इस खेल में बच्चे आँगन परछी में बैठकर, गोलाकार घेरा बनाते है। घेरा बनाने के बाद जमीन में हाथों के पंजे रख देते है। एक लड़का अगुवा के रूप में अपने दाहिने हाथ की तर्जनी उन उल्टे पंजों पर बारी–बारी से छुआता है। गीत की अंतिम अंगुली जिसकी हथेली पर समाप्त होती है वह अपनी हथेली सीधी कर लेता है। इस क्रम में जब सबकी हथेली सीधे हो जाते है, तो अंतिम बच्चा गीत को आगे बढ़ाता है। इस गीत के बाद एक दूसरे के कान पकड़कर गीत गाते है।

1) अटकन–बटकनः– अटकन मटकन दही चटाका लौहा लाटा बन में काँटा चल चल बेटी गंगा जाबो गंगा ले गोदावरी पक्का पक्का बेल खाबो बेल के डारा टुट गे बिहाती डोकारी छूट गे।

2) काऊँ माऊँ मेकरा के झाला फुर्रकृकृ।

फुगड़ी

बालिकाओं द्वारा खेला जाने वाला फुगड़ी लोकप्रिय खेल है। चार, छः लड़कियाँ इकट्ठा होकर, ऊँखरु बैठकर बारी–बारी से लोच के साथ पैर को पंजों के द्वारा आगे–पीछे चलाती है। थककर या साँस भरने से जिस खिलाड़ी के पाँव चलने रुक जाते हैं वह हट जाती है।

Notes

लंगड़ी

यह वषद्धि चातुर्थ और चालाकी का खेल है। यह छू छुओवल की भाँति खेला जाता है। इसमें खिलाड़ी एड़ी मोड़कर बैठ जाते है और हथेली घुटनों पर रख लेते है। जो बच्चा हाथ रखने में पीछे होता है बीच में उठकर कहता है।

खुडुवा (कबड्डी)

खुड़वा पाली दर पाली कबड्डी की भाँति खेला जाने वाला खेल है। दल बनाने के इसके नियम कबड्डी से भिन्न है। दो खिलाड़ी अगुवा बन जाते है। षेश खिलाड़ी जोड़ी में गुप्त नाम धर कर अगुवा खिलाड़ियों के पास जाते है – चटक जा कहने पर वे अपना गुप्त नाम बताते है। नाम चयन के आधार पर दल बन जाता है। इसमें निर्णायक की भूमिका नहीं होती, सामूहिक निर्णय लिया जाता है।

डांडी पौहा

डांडी पौहा गोल घेरे में खेला जाने वाला स्पर्द्धात्मक खेल है। गली में या मैदान में लकड़ी से गोल घेरा बना दिया जाता है। खिलाड़ी दल गोल घेरे के भीतर रहते है। एक खिलाड़ी गोले से बाहर रहता है। खिलाड़ियों के बीच लय बद्ध गीत होता है। गीत की समाप्ति पर बाहर की खिलाड़ी भीतर के खिलाड़ी किसी लकड़े के नाम लेकर पुकारता है। नाम बोलते ही षेश गोल घेरे से बाहर आ जाते है और संकेत के साथ बाहर और भीतर के खिलाड़ी एक दूसरे को अपनी ओर करने के लिए बल लगाते है, जो खींचने में सफल होता वह जीतता है। अंतिम क्रम तक यह स्पर्द्धा चलती है। श्रप्ष्|छ झव्ह्।

जातियाँ

छत्तीसगढ़ में कई जातियाँ और जनजातियाँ हैं, जिनमें से कुछ हैं गोंड, अमात, हल्बा, कंडरा, कंवर, ठाकुर, बैंगा, मुरिया, माडिया, उरॉव, कमार, भुंजिया, भारिया, बरई, सतनामी, और बियार, मौवार ।

पर्यटन स्थल

गिरौदपुरी या गिरोधपुरी – भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के बलौदा बाजार जिले में स्थित एक नगर है। जोकि अभी वर्तमान समय में रायपुर जिले में आती है। यही ही कुतुबमीनार से भी ऊँची किला है। जिसे जैतस्तंभ कहा जाता है।

जल विहार बुका – हसदेव नदी के चारो तरफ हरे भरे पहाड़ियों से घिरा जलमग्न सुंदर प्राकृतिक सौंदय से परिपूर्ण मिनीमाता बांगो बाँध का भराओ वाला जगह है जो कोरबा जिला के मड़ई गाँव से पाँच किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां नाविक रहते है जो जल विहार कराते है।

केंदई जल प्रपात – केंदई जलप्रपात कोरबा जिला मुख्यालय से 85 किलोमीटर की दूरी पर अम्बिकापुर रोड पर स्थित है इस पर सड़क मार्ग द्वारा पहुँचा जा सकता है। जलप्रपात के

नीचे जाने पर इंद्रधनुश की सुंदर चित्र बनती है जो मनमोहक है देखा जा सकता है। तथा चारो ओर हरे भरे पहाड़ियों से घिरा हुआ है।

गोल्डन आइलैंड – गोल्डन आइलैंड केंदई ग्राम से सात किलोमीटर मीटर दक्षिण में है जहाँ तक सड़क मार्ग द्वारा पहुँचा जा सकता है। जो हसदेव नदी पर एक लैंड बना हुआ है जहाँ नाविक भी रहते है जो कभी भी जल विहार करा सकते है। जो बहुत ही आनंदमय जगह है। तथा पिकनिक स्पॉट भी है।

इकाई – 2

छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थल

छत्तीसगढ़ में अनेक एतेहासिक एवं पुरातत्विक स्थल है, जो पर्यटन की दृश्टि से काफी महत्वपूर्ण है। ये छत्तीसगढ़ के गौरवषाली इतिहास को बयां करते हैं। यहां सिरपुर नामक स्थान हैं जहां भगवान बुध्द आये थे तथा सम्राट अषोक ने स्तूप भी बनवाया था। डीपाडीह नाम स्थान पर खुदाई करने से अनेक मंदिर प्राप्त हुए हैं। इस स्थान से षाक्य एवं षैव समुदाय के पुरातत्वि अवषेश प्राप्त हुए हैं। यहां भोरमदेव नामक मंदिर हैं, जिसकी समानता के खजुराहो के मंदिर से की जाती हैं। मल्हार में ताम्रकाल से लेकर मध्यकाल तक का क्रमबध्द इतिहास प्राप्त हुआ है। देवबलौदा दुर्ग में प्राचीन षिव मंदिर है। तालागांव में देवरानी दृ जेठानी मंदिर है जो गुत्पकाल की स्थाप्य कला का बोध कराती है। बारसूर नामक स्थान विषालकाय गणेष प्रतिमा के लिए जानी जाती हैं। यहां छिंदक नागवंषी का षासन रहा है। आओं इन सभी सथानों के बारे में जानें।

छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थल

छत्तीसगढ़ में अनेक एतेहासिक एवं पुरातत्विक स्थल है, जो पर्यटन की दृश्टि से काफी महत्वपूर्ण है। ये छत्तीसगढ़ के गौरवषाली इतिहास को बयां करते हैं। यहां सिरपुर नामक स्थान हैं जहां भगवान बुध्द आये थे तथा सम्राट अषोक ने स्तूप भी बनवाया था। डीपाडीह नाम स्थान पर खुदाई करने से अनेक मंदिर प्राप्त हुए हैं। इस स्थान से षाक्य एवं षैव समुदाय के पुरातत्वि अवषेश प्राप्त हुए हैं। यहां भोरमदेव नामक मंदिर हैं, जिसकी समानता के खजुराहो के मंदिर से की जाती हैं। मल्हार में ताम्रकाल से लेकर मध्यकाल तक का क्रमबध्द इतिहास प्राप्त हुआ है। देवबलौदा दुर्ग में प्राचीन षिव मंदिर है। तालागांव में देवरानी दृ जेठानी मंदिर है जो गुत्पकाल की स्थाप्य कला का बोध कराती है। बारसूर नामक स्थान विषालकाय गणेष प्रतिमा के लिए जानी जाती हैं। यहां छिंदक नागवंषी का षासन रहा है। आओं इन सभी सथानों के बारे में जानें।

सिरपुर (समषध्दि की नगरी)

सिरपुर का प्राचीन नाम श्रीपुर है, जिसका अर्थ होता है समषध्दि की नगरी। सिरपुर को चित्रांगपुर भी कहा करते थे। महाभारत काल में

सिरपुर अर्जून के पुत्र भब्रुवाहन की राजधानी थी, जिसको मणिपुर के नाम से जाना जाता था। बौध्द ग्रंथ के अनुसार भगवान बुध्द यहां आए थे। यहां सम्राट अषोक द्वारा स्तूप भी बनाया गया था।

सिरपुर (समषध्दि की नगरी)

सिरपुर महासमुंद जिले में स्थित है, जो कि महानदी के पूर्वी तट पर स्थित है। यह राश्ट्रीय राजमार्ग क्र. 06 पर आरंग के बाद आगे की ओर 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सिरपुर प्राचीन समय में दक्षिण कौषल की राजधानी रही है। सिरपुर पाण्डुवंषी, सोमवंषी एवं षरभपुरीय सम्राटों की राजधानी भी रही है। सन 639 ई. में चीनी यात्री ने सिरपुर की यात्रा की थी।

सिरपुर में महाषिवरात्रि पर मेला लगता है। छत्तीसगढ़ षासन द्वारा बुध्दि पूर्णिमा के दिन सिरपुर महोत्सव का आयोजन किया जाता है। सिरपुर के दर्षनीय स्थलों में लाल ईंटो से निर्मित लक्ष्मण मंदिर सर्वाधिक प्रसिध्द है। इस मंदिर का निर्माण महारानी वासटा ने अपने पति हर्श गुप्त की याद में कराया था। यह मूल रूप से विश्णु मंदिर है। अभिलेख के अनुसार इस मंदिर का निर्माण 650 ई. के आसपास है। मंदिर के गर्भ गृह में लक्ष्मण एवं षेश नाग सांप की पत्थर की प्रतिमा है। इसी कारण इस मंदिर को लक्ष्मण मंदिर कहा जाता होगा। इस मंदिर की दीवारों में जमीन से लगभग 50 फीट की उंचाई पर विभिन्न हिन्दू देवी देवताओं, किन्नरों, यक्ष, पषुओं एवं पुश्पों की सुंदर कलाकृतियां बनी हुई है। ईंटों पर किसी भी प्रकार का प्लास्टर नहीं के बावजूद भी इसका सौंदर्य पर्यटकों का मन मोह लेती है। लक्षमण मंदिर के अतिरिक्त यहां राम मंदिर, गंधेष्वर महादेव मंदिर, एवं संग्राहलय आदि दर्षनीय है। गंधेष्वर महादेव मंदिर का जीर्णोध्दार चिमन जी भोसला ने कराया था। इस मंदिर के प्रांगन में विभिन्न धर्म भगवान बुध्द, जैन मूर्ति, नटराज, विश्णु मंदिर, महिसासुर मदिर्नी की मूर्तियां है। सिरपुर महायान, जैन एवं बौध्द धर्म का बहुत बड़ा केन्द्र रहा है। यहां विभिन्न बौध्द स्मारक है, जिनमें से स्वातिक विहार, प्रभुकुटी विहार, तीवरदेव आदि उल्लेखनीय है।

डीपाडीह

डीपाडीह छत्तीसगढ़ राज़्य बलरामपुर जिले में स्थित है। जो अंबिकापुर से 73 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां कभी सामनी सिंह नाम का द्रविड़ राजा का षासनकाल था। यहां लगभग 6 किलोमीटर के दायरे में प्राचीन भग्न मंदिरों के अवषेश टीलों के रूप में विद्‌यमान है। यहां दर्षनीय स्थलों में प्रमुख रूप से सामत झरना, रानी पोखर, चामुण्डा मंदिर, पंचायतन मंदिर। यहां खनन कार्य होने के कारण अनेक मंदिर मिले हैं, जिसमें अधिकांष षिव मंदिर है। सामत झरना का षिव मंदिर इन मंदिरों में सबसे बड़ा एवं भव्य है।

डीपाडीह

भगवान राम का यहां भव्य महल था जहां रात–दिन अखण्ड रूप से एक विषाल दीपक जलता रहता था। इसका कारण इसका नाम दीपा पड़ा तथा बाद में इसका नाम डीपाडीह हो गया। यहां से षाक्य एवं षैव समुदाय के भी पुरातविक अवषेश प्राप्त हुए हैं। इन अवषेशों में महिसासुर मर्दिर्नी, षिवलिंग, उमामहेष्वर, एवं भैरव की रूद्र प्रतिमा प्राप्त हुई है। यहां ब्रम्हा जी की भी मूर्ति प्राप्त हुई है, जिसकी दाड़ी मूंछ नहीं है।

यहां पर चईता पहाड़ पर डीपाडीह के स्मारकों के लिए स्थाप्य खण्ड को कांटकर मंदिर हेतु प्रयोग किया गया है। इस पहाड़ में एक प्राचीन अभिलेख भी प्राप्त हुआ है, जिस पर नागरी लिपी में 'ओम नमो विष्कर्माय' अंकित है।

Notes

भोरमदेव मंदिर (छत्तीसगढ़ का खजुराहो)

भोरमदेव कवर्धा जिले में स्थित है, जो कि छपरा के निकट चौरागांव नामक स्थान में स्थित है। भोरमदेव मंदिर का निर्माण फणि नागवंषी राजा गोपाल देव ने 1089 ई. में किया था। यह मंदिर पहाड़ों के बीच सुन्दर सरोवर के किनारे स्थित है। भोरमदेव मंदिर का निर्माण नागर षैली में हुआ है। यह मंदिर खजुराहों के मंदिर से मिलता जुलता है। इस मंदिर का नाम गोड़ के देवता भोरमदेव के नाम पर हुआ है । स्वरूप की दृश्टि से इस मंदिर के तीन भाग है– पहला भाग है मण्डप, दूसरा है अन्तराल, तीसरा है गर्भगृह। ये तीनों क्रमषः एक बाद एक बने हुए हैं। इस मंदिर में तीन ओर प्रवेष द्वारा है दृ उत्तर, दक्षिण एवं पूर्व की ओर प्रवेष द्वार है। यहां सिढ़ियों के माध्यम से लोग मंडप में एवं वहां से अन्तराल में प्रवेष करते हैं। मंडप का आकार 40 फीट चौड़ा एवं 60 फीट लंबा है। गर्भगृह नीचे की ओर स्थित है, जिसमे जाने के लिए सीढ़ियों से उतरकर नीचे जाना जाना पड़ता है। गर्भगृह में षिवलिंग स्थापित है। मंदिर की दीवारों पर हाथी घोड़े, गणेष, नटराज एवं 54 प्रकार की रति क्रिया करती हुई मिथुन मूर्तियां स्थापित है। यह मूर्तियों खजुराहों की मूर्तियों से मेल खाती है, इस कारण भोरमदेव मंदिर को छत्तीसगढ़ का खजुराहो कहा जाता है। भोरमदेव में मड़वा महल एवं छेरका महल भी स्थित है, जो दर्षनीय है। मड़वा महल का निर्माण विवाह सम्पन्न कराने के लिए किया था, इस कारण मड़वा महल को दूल्हा देव भी कहते हैं। ऐसी मान्यता है इस स्थान पर नागवंषी राजा ने हैहयवंषी राजकुमारी से विवाह किया था। मड़वा महल का निर्माण नागवंषी राजा रामचन्द्र ने 1349 ई. में किया था। मड़वा महल के पास छेरका महल स्थित है। छेरका अर्थ होता है छेरी अर्थात बकरी। इस मंदिर के आसपास से बकरी की गंध आती है, इस कारण इस महल को छेरका महल कहा जाता है। यहां प्रतिवर्श छत्तीसगढ़ षासन द्वारा भोरमदेव महोत्सव का आयोजन किया जाता है।

मल्हार

मल्हार बिलासपुर जिले में स्थित है। यह एक ऐतिहासिक महत्व का एक ग्राम है। यह बिलासपुर जिला मुख्यालय से 32 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है एवं मस्तुरी तहसील से 14 किलीमीटर की दूरी पर स्थित है। भारत के 52 सिध्द षक्तिपीठों में से 51 षक्तिपीठ मल्हार में स्थापित है। यहां पर ताम्रकाल से लेकर मध्यकाल तक का क्रमबध्द इतिहास प्राप्त हुआ है। खुदाई से यहां मौर्यकाल की ईटों की दीवारें प्राप्त हुई है। यहां से रोमन सिक्कें प्राप्त हुई है, जिससे यह पता चलता है कि इस क्षेत्र में विदेषी व्यापार होता था। इस स्थान की खुदाई से ईसा की दूसरी सदी की ब्राम्ही लिपि में लिखित मिटटी की मुहरें प्राप्त हुई है, जिस पर 'गामस कोसलिया' (कोसली ग्राम) एवं वेद श्री लिखा हुआ है। कल्चुरी राजा पृथ्वीदेव

द्वितीय के षिलालेख में इसका प्राचीन नाम मल्लाल रखा है। दूसरे षिलालेखों में इसका नाम मल्लालपत्तन है। यह अरपा, लीलागर एवं षिवनाथ नदियों से घिरा हुआ है

।

यहां दर्षनीय स्थलों में प्रमुख रूप से उत्खनन से प्राप्त पातालेष्वर मंदिर, देउरी मंदिर एवं डिंडेष्वरी मंदिर आदि है। इनमें डिंडेष्वरी मंदिर बहुत ही ज्यादा प्रसिध्द है। 1954 ई. में इस मंदिर का जीर्णोध्दार किया गया था। इस मंदिर में षुध्द ग्रेनाइट से निर्मित डिंडेष्वरी देवी की प्रतिमा है, जो मूर्तिकला का सर्वोत्तम नमूना है। यहां सर्वाधिक प्राचीन चतुर्भुज विश्णु की प्रतिमा है। इस प्रतिमा में मौर्यकालीन ब्राम्ही लेख अंकित है। जिसका निर्माण 200 ई.पू. हुआ है। यहां एक संग्राहलय भी है जिसमें जैन तथा वैशणव एवं षैव सम्प्रदाय की मूर्तियां रखी हुई है। यहां बुध्द बोधिसत्व मंजूरी, तारा जैसी अनेक बौध्द प्रतिमाएं है। यहां जैन तीर्थकारों, यक्ष–यक्षिणाओं की प्रतिमाएं भी मौजूद है। यहां 10 वीं षताब्दी से लेकर 13 वीं षताब्दी तक के समय में अनके षिव मंदिरों का निर्माण हुआ है। यहां 1167 ई. में निर्मित केदारेष्वर मंदिर (पातालेष्वर मंदिर) अति महत्वपूर्ण है। इसका निर्माण राजा सोमराज नाम के एक ब्राम्हण द्वारा किया गया।

देव बलौदा (प्राचीन षिव मंदिर)

देवबलौदा दुर्ग जिले में स्थित है। इसकी दूरी जिला मुख्यालय से 14 मील तथा भिलाई रेलवे स्टेषन से 2 मील की दूरी पर स्थित है। यहां प्राचीन षिव मंदिर स्थित है। यह मंदिर भग्न है। इस मंदिर में विभिन्न प्रकार की मूर्तियां स्थापित है, जिसमें विभिन्न प्रसंग करते हुए दिखाया गया है। यहां मंदिर की दीवारों पर रीछ (बंदर) की आकृति उत्कीर्ण है। यहां एक स्थान पर रीछ का षिकार करते हुए दिखाया गया है। मंदिर के अंदर चारो स्तम्भों में विभिन्न मूर्तियां उत्कीर्ण है। मंदिर के दरवाजे के बाहर गणेष जी एवं मां सरस्वती की मूर्तियां विद्यमान है।

तालागांव (देवरानी–जेठानी मंदिर)

तालागांव छत्तीसगढ़ का पुरात्विक स्थल है। यह मंदिर बिलासपुर से 30 किलोमीटर की दूरी पर मनियारी नदी के तट पर अमेठी कांपा नाम के गांव के समीप स्थित है। तालागांव में चौथीं पांचवी षताब्दी के देवरानी–जेठानी मंदिर तथा रूद्र षिव कालपुरूश की मंदिर प्रसिध्द है। देवरानी–जेठानी एक प्रसिध्द षैव मंदिर है। इस मंदिर के बारे में प्राचीन मान्यता है कि षरभपुरीय राजप्रसाद की दो रानियों ने ये मंदिर बनवाये थे। देवरानी मंदिर 7 फट उंची एवं 4 फुट चौड़ी लाल बलुआ पत्थर से बना है। यह मंदिर गुप्तकालीन स्थाप्य कला का बोध कराती है। जेठानी मंदिर कुशानकालीन स्थाप्य कला का बोध कराती है। ये दोनों मंदिर चौथी–पांचवी षताब्दी के मध्य की है। देवरानी मंदिर के मुख्य द्वार पर रूद्र षिव कालपुरूश की 1500 वर्श पुरानी प्रतिमा है। इस रूद्र षिव की प्रतिमा में 11 अंग विभिन्न प्रकार के जीव–जन्तुओं की मुख वाली है। यह मूर्ति पांचवी छटवीं षताब्दी में षरभपुरीय राजाओं के समय बनाई गई थी। यहां जलेष्वर महादेव का भी मंदिर है। इन स्थाप्य प्रतिमाओं से पता चलता है कि यह स्थान विभिन्न संस्कृतियों की धर्मस्थली रही है, जो षैव उपासक थे।

बारसूर

बारसूर (गणेष प्रतिमा)

बारसूर दंतेवाड़ा जिला में स्थित है। बारसूर जाने के लिए जगदलपुर से गीदम होकर 116 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। बारसूर छिंदक नागवंषी राजाओं की राजधानी रही है। बारसूर छिंदक नागवंषियों की राजधानी रही है। छिंदक नागवंषियों ने 10 वीं षताब्दी से लेकर 14 वीं षताब्दी तक बस्तर में षासन किया था। उस समय बस्तर के अधिकांष भाग चक्रकूट या भ्रमरकूट के नाम से जाना जाता था। यहां गणेष जी की विषालकाय प्रतिमा काफी प्रसिध्द है। इसके अतिरिक्त यहां मामा–भांजा मंदिर स्थित है। यह मंदिर नागर षैली में निर्मित है। यहां इसके अतिरिकत दर्षनीय स्थलों में बत्तीसा मंदिर, चन्द्रादित्य मंदिर भी स्थित है। इन मंदिरों की मूर्तियां तथा मंदिर स्थाप्य कला के उदाहरण है।

छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल

रायपुरः छत्तीसगढ़ के जंगल यहां के धार्मिक और पर्यटक स्थल पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं. हर साल बड़ी संख्या में यहां देष और विदेष से पर्यटक आते हैं. मान्यता है कि वनवास के दौरान प्रभु श्रीराम और माता सीता लक्ष्मण जी के साथ यहां रुके थे. ऋशि मुनियों की रक्षा के लिए श्री राम और लक्षमण जी ने कई राक्षसों का संहार किया था. चंदखुरी में कौषल्या माता का मंदिर भी है. छत्तीसगढ़ को रामजी का ननिहाल भी कहते हैं. रामजी का ननिहाल होने के नाते अयोध्या नगरी से छत्तीसगढ़ का अलग नाता भी है. विश्व पर्यटन दिवस के मौके पर आज हम आपको छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों की जानकारी देने जा रहे हैं.

दंतेवाड़ा में मां दंतेश्वरी का दरबारः 52वें षक्तिपीठ के रुप में मां दंतेश्वरी मंदिर की अदभुत पहचान है. इतिहास के पन्नों को पलटें तो पता चलता है कि मंदिर का निर्माण करीब 850 साल पहले हुआ था. डंकिनी और षंखिनी नदी के संगम पर मंदिर की स्थापना हुई है. करीब 700 साल पहले मंदिर का जीर्णोद्वार वारंगल से आए राजाओं ने कराया था. सालों पहले यहां बलि की परंपरा भी प्रचलित रही. 1932 से 1933 में दंतेश्वरी मंदिर का दूसरी बार जीर्णोद्धार तत्कालीन बस्तर महारानी प्रफुल्ल कुमारी देवी ने कराया था. मां दंतेश्वरी मंदिर में भक्त अपनी मनोकामना पूर्ति के लिए मनोकामना ज्योति जलाते हैं.

डोंगरगढ़ की पहाड़ी पर विराजी हैं मां बमलेश्वरीः राजनांदगांव के डोंगरगढ़ी पहाड़ी पर करीब 1,600 फीट की ऊंचाई पर मां बम्लेश्वरी विराजीं हैं. साल में दो बार यहां पर नवरात्र का मेला लगता है. दोनों मेलों में करीब 20 लाख से ज्यादा भक्त पहुंचते हैं. मां बमलेश्वरी के दरबार में विदेषों से भी भक्त दर्षन के लिए पहुंचते हैं. मां बम्लेश्वरी मंदिर में भी मनोकामना जोत प्रज्ज्वलित करने की परंपरा है.

भोरमदेव मंदिरः कबीरधाम के चौरागांव में प्रसिद्ध भोरमदेव का ऐतिहासिक मंदिर है. भोरमदेव मंदिर लगभग एक हजार साल पुराना है. इसकी राजधानी रायपुर से दूरी लगभग 125 किलोमीटर है. भोरमदेव मंदिर भगवान षंकर को समर्पित है. मंदिर पहाड़ियों के बीच बना

Notes

है. ऐसा माना जाता है कि यह मंदिर 7वीं षताब्दी से 11वीं षताब्दी के बीच बनाया गया था. भोरमदेव मंदिर की झलक मध्य प्रदेष के प्रसिद्ध खजुराहो मंदिर से मिलती जुलती है. जिस वजह से इस मंदिर को ″छत्तीसगढ़ का खजुराहो″ के नाम से भी जाना जाता है.

बस्तर के 'ढोलकल गणेष': बस्तर जिला मुख्यालय से करीब 12 किलोमीटर दूर फरसपाल गांव से सटे बैलाडीला के पहाड़ पर 'ढोलकल गणेष' जी विराजे हैं. तीन हजार फीट ऊंची चोटी पर ललितासन में विराजित प्राचीन गणेष जी की ये मूर्ति अपने आप में अनूठी है. कहा जाता है कि मूर्ति 11वीं सदी की है. सालों तक सिर्फ गांव के लोग ही इसे जानते रहे. ढोलकल में स्थानीय लोगों के साथ देषी विदेषी सैलानी भी आने लगे हैं.

चंदखुरी गांव में कौषल्या माता का मंदिरः रायपुर से 17 किलोमीटर की दूरी पर चंदखुरी गांव हैं. इस गांव को भगवान राम की मां कौषल्या का जन्म स्थान माना जाता है. यहां तालाब के बीचों–बीच माता कौषल्या का मंदिर है, जो 10वीं षताब्दी में बनाया गया था. रामजी का ननिहाल भी छत्तीसगढ़ को माना जाता है. रामजी का ननिहाल छत्तीसगढ़ होने के चलते अयोध्या नगरी से छत्तीसगढ़ का ऐतिहासिक और धार्मिक नाता रहा है.

नारायणपाल मंदिरः बस्तर की विरासत अपनी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और आध्यात्मिक पहचान के लिए जानी जाती है. इंद्रावती नदी के पास प्राचीन विश्णु जी का मंदिर भी है. इंद्रवती और नारंगी नदियों के संगम पर बना ये मंदिर प्राचीन वास्तुकला का अदभुत नजारा पेष करता है. नारायणपाल गांव में मंदिर होने के चलते इस मंदिर का नाम नारायणपाल मंदिर रखा गया.

कोटमसर गुफाः कोटमसर गुफा जगदलपुर में है. कोटमसर गुफा पर्यावरण से प्रेम करने वाले पर्यटकों को खूब भाता है. कोलेब नदी की सहायक नदी केगर पर कोटमसर गुफा है. चूना पत्थर बनी ये गुफा है. कोटमसर गुफा की ऊंचाई समुद्र तल से 560 फीट ऊंची है. कोटमसर गुफा को देखने के लिए हर साल लाखों पर्यटक यहां आते हैं. मॉनसून के दौरान कोटमसर गुफा को बंद कर दिया जाता है.

कैलाष गुफाः बस्तर की कैलाष गुफा को सबसे प्रचीन गुफाओं में से एक माना जाता है. ये गुफा भी चूना पत्थर से बनी है. गुफा के अंदर स्टैलेक्टसाइट्स और स्टालाग्माइट्स इसे कैलाष का रुप देते हैं. गुफा में बनी ड्रिपस्टोन संरचनाओं को स्थानीय लोगों द्वारा पूजा भी जाता है. मॉनसून के दौरान यहां भी पर्टयकों को गुफा के भीतर जाने से रोक दिया जाता है.

कांगेर घाटीःकांगेर घाटी करीब 200 वर्ग किलोमीटर में फैला राश्ट्रीय उद्यान है. वन्यजीवों के अलावा यहां सैकड़ों प्रजाती के पेड़ पौधे पाए जाते हैं. बस्तर की पहाड़ी मैना भी यहां मिलती है. कहते हैं कि बस्तर की पहाड़ी मैना इंसानों की तरह आवाज निकालने में माहिर होती है. कांगेर घाटी मगरमच्छों के लिए भी काफी फेमस है.

बारनवापारा वन्यजीव अभ्यारणःबारनवापारा वन्यजीव अभ्यारण महासमुंद जिले में है. बारनवापारा वन्यजीव अभ्यारण 250 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है. दुनिया भर से

सैकड़ों पर्यटक इस अभ्यारण्य में हरे–भरे जंगल का आनंद लेने आते हैं. हिरणों के अलावा यहां कई दुर्लभ वन्य जीव भी पाए जाते हैं.

Notes

महंत घासीदास स्मारक संग्रहालयः महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय रायपुर में है. इसका निर्माण राजा महंत घासीदास के समय में किया गया था. रिसर्च और इतिहास में जिज्ञासा रखने वाले लोगों के लिए महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय अपने आप में अलग और अनूठा है.

सिरपुरः सिरपुर अपनी ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व के चलते हमेषा से आकर्शण का केंद्र रहा है. सिरपुर स्थल पवित्र महानदी के किनारे पर बसा हुआ है. सिरपुर में सांस्कृतिक और वास्तुकौषल की कला का अनुपम संग्रह है. सोमवंषी राजाओं के काल में सिरपुर को श्रीपुर के नाम से जाना जाता था .धार्मिक मान्यताओ और वैज्ञानिक दृश्टिकोण से आज भी सिरपुर का अपना अलग स्थान इतिहास में है.

मां महामाया मंदिरः बिलासपुर के रतनपुर में महामाया मंदिर है. 52 षक्तिपीठों में महामाया मंदिर की गिनती होती है. महामाया मंदिर मां सरस्वती और मां लक्ष्मी जी को समर्पित है. कलचुरियों के षासनकाल के दौरान इस मंदिर का निर्माण हुआ था. मां के मंदिर में स्थापित गोड्डे महामाया को कोसलेश्वरी के नाम से भी जाना जाता है.

हटकेश्वर मंदिरः रायपुर का हटकेश्वर मंदिर पर्यटकों की हमेषा से पहली पसंद रहा है. हटकेश्वर मंदिर में भगवान षिव विराजे हैं. मंदिर को हटकेश्वर महादेव मंदिर के नाम से भी जाना जाता है. मंदिर के बाहरी हिस्सों में नौ ग्रहों और देवातओं का वास माना जाता है. वास्तु कला की दृश्टि से हटकेश्वर मंदिर अपने आप में अदभुत है. सावन मास में हटकेश्वर में जल अर्पण करने से भोलेनाथ प्रसन्न होते हैं ऐसी मान्यता भक्तों के बीच है.

पवित्र जैतखामःबलौदाबाजार के गिरौदपुरी में सतनामी समुदाय का पवित्र जैतखाम स्तंभ है. माना जाता है कि साल 1842 में गिरौदपुरी में सबसे पहले बाबा गुरु घासीदास द्वारा ही इसकी स्थापना की गई. संत षिरोमणि बाबा गुरु घासीदास ने ही इसकी स्थापना के बाद नारा दिया कि "मनखे मनखे एक समान". संत बाबा गुरु घासीदास ने इसे एकता का प्रतीक और सत्य एवं अहिंसा के स्मारक के तौर पर प्रचारित किया.

छत्तीसगढ़ के कुछ पुरातात्विक स्थल :

अमर्गुफ़ाः यह स्थल रायगढ़ षहर से 33 किमी दक्षिण–पष्चिम में स्थित है। यहां पषु के आंकड़े, मानव के आंकड़े, षिकार के दृष्य आदि का चित्रण किया गया है।

बसंझारः यह स्थल रायगढ़ से लगभग 27 किमी की दूरी पर दक्षिण–पष्चिम में स्थित है। इस गांव की पहाड़ियों में 300 से अधिकषैल चित्र मौजूद हैं जिसमें हथियाँ, बंदर, मर्मधारियों, घोड़े, जंगली भैंस, षिकार के दृष्य, नाचते हुए दृष्य, ज्यामितीय डिजाइन इत्यादि के खूबसूरती से चित्रित चित्र षामिल हैं।

भंवरखोल : बिलासपुर से 12 किलोमीटर की दुरी पर सतघाट और पतराली गांवों के बीच और षेरखखला षैल चित्र पाए गए हैं, जिन्हें भंवरखोल के नाम से जाना जाता है। यहां मत्स्य कन्या, जंगली भैंस, भालू, षिकार के दृष्य, हथेली के छापों, ज्यामितीय डिजाइनों, स्वस्तिक आदि के चित्रों हैं। कुछ चित्रकारी खराब मौसम से धुंधली हो गई हैं।

बोतल्दा :

रायगढ़ के उत्तर–पष्चिम के पहाड़ी गांव सैलाश्रय (स्थानीय रूप से सिंह षिविर के रूप में जाना जाता है) प्राप्त हुआ है। षैल चित्र मेसोलिथिक से लेकर ऐतिहासिक काल तक के है। यहाँ पषु, मानव आकृतियों, षिकार के दृष्य और ज्यामितीय डिजाइनों मिले है।

छापमंड : रायगढ़ – बिलासपुर सड़क पर, छापमंड की पहाड़ियों षैलचित्र प्राप्त हुए है, जो कि ऐतिहासिक काल के हैं। यहाँ पषु आंकड़े, पक्षियों, मानव आंकड़े, युद्ध के दृष्य आदि का चित्रण किया गया है।

सरगुजा जिले के पुरातात्विक स्थल

कबरा गुफा :

यह गुफा रायगढ़ जिला मुख्यालय से 8 किलोमीटर पूर्व की दिषा में स्थित है। इस गुफा में प्राचीनतम मानव निवास के प्रमाण मिले हैं। यहां की दीवारों पर पाशाणकालीन मानव द्वारा रंगीन चित्रकारी की गई है। यहां लगभग 2000 फीट की उंचाई पर गहरे गैरिक रंग के षैलचित्र बने हुए हैं। जिनमें हिरण, घोड़ा तथा कछुआ के चित्र बने हुए हैं।यहां जंगली भैंसे का बहुत बड़ा चित्र भी है।

खैरपुरः

रायगढ़ से करीब 12 किमी उत्तर टिखाखोल जलाषय के निकट स्थित है। यहाँ मऐतिहासिक काल से संबंधित अनेक नष्त्य दृष्य और पषु चित्र मौजूद हैं।

ओंगना :

रायगढ़ से 2 किलोमीटर की दूरी पर, बानी पहाड़ियों में सौ से अधिक रॉक पेंटिंग्स स्थित हैं। यहाँ बड़े आकार के बैल और सजाया हुआ मानव सिर हैं।

टोंगरीपानी :

जषपुर जिले पत्थलगांव तहसील के अंतर्गत टोंगरीपानी पहाड़ी पर स्थित है। पंडरीपानी पंचायत के इस स्थान को "लिखा पखना बानी पाथर" के नाम से जाना जाता है। इस स्थान पर पांच षैलाश्रय पुरातात्विक टीम को मिले हैं। प्राथमिक अध्ययन में यह षैलाश्रय करीब 8 से 10 हजार वर्श पूर्व के माने जा रहे हैं। षैलाश्रय पर मिले चिन्हों के स्थान पर

उक्त स्थानों का नामकरण होने की संभावना है। राम का घोड़ा स्थान पर घोड़े की आकृति बनी हुई है।

छत्तीसगढ़ राज्य द्वारा संरक्षित स्मारकों की सूची–

01. कुलेश्वर मंदिर :– नवागांव धमतरी

02. कर्णेश्वर महादेव मंदिर समूह :– सिहावा धमतरी

03. षिव मंदिर :– चन्दखुरी रायपुर

04. प्राचीन ईंट मंदिर :– नवागांव रायपुर

05. षिव मंदिर :– गिरौद रायपुर

06. सिद्धेश्वर मंदिर :– पलारी बलौदाबाजार–भाटापारा

07. चितावरी देवी मंदिर :– धोबनी बलौदाबाजार–भाटापारा

08. प्राचीन भग्न मंदिर :– डमरू बलौदाबाजार–भाटापारा

09. मावली देवी मंदिर :– तरपोंगा बलौदाबाजार–भाटापारा

10. फणिकेश्वरनाथ महादेव मंदिर :– फिंगेश्वर गरियाबंद

11. आनंद प्रभु कुटी विहार :– सिरपुर महासमुंद

12. स्वास्तिक विहार :– सिरपुर महासमुंद

13. जगन्नाथ मंदिर :– खल्लारी महासमुंद

14. नागदेव मंदिर :– नगपुरा दुर्ग

15. षिव मंदिर :– नगपुरा दुर्ग

16. विश्णु मंदिर :– बानवरद दुर्ग

17. षिव मंदिर एवं चतुर्भुजी मंदिर :– धमधा दुर्ग

18. बहादुर कलारिन की माची :– चिरचारी बालोद

19. महापाशाणीय स्मारक :– करहीभदर बालोद

20. महापाशाणीय स्मारक :– धनोरा बालोद

21. महापाशाणीय स्मारक :– कुलिया बालोद

22. महापाशाणीय स्मारक :– मुजगहन बालोद

Notes

23. महापाशाणीय स्मारक :— करकाभाट बालोद

24. मढ़ियापाट (भग्न मंदिर) :— डौण्डीलोहारा बालोद

25. प्राचीन मंदिर :— डौण्डीलोहारा बालोद

26. कुकुरदेव मंदिर :— खपरी बालोद

27. षिव मंदिर :— पलारी बालोद

28. षिव मंदिर :— जगन्नाथपुर बालोद

29. कपिलेश्वर मंदिर समूह :— बालोद बालोद

30. बजरंगबली मंदिर :— सहसपुर बेमेतरा

31. षिव मंदिर :— सहसपुर बेमेतरा

32. घुंघुसराजा मंदिर :— देवकर बेमेतरा

33. षिव मंदिर :— बिरखा राजनांदगांव

34. भोरमदेव मंदिर :— चौरा कबीरधाम

35. छेरकी महल :— चौरा कबीरधाम

36. मण्डवा महल :— चौरा कबीरधाम

37. महामाया मंदिर :— रतनपुर बिलासपुर

38. प्राचीन षिव मंदिर :— किरारीगोढ़ी बिलासपुर

39. देवरानी—जेठानी मंदिर :— अमेरी कापा (ताला गांव) बिलासपुर

40. षिव मंदिर :— गनियारी बिलासपुर

41. धूमनाथ मंदिर :— सरगांव मुंगेली

42. लक्ष्मणेश्वर मंदिर :— खरौद जांजगीर— चांपा

43. षैलाश्रय :— सिंघनपुर रायगढ़

44. कबीरपंथी सतगुरूओं की तीन मजार :— कुदुरमाल कोरबा

45. गुड़ियारी मंदिर :— केषरपाल बस्तर

46. षिव मंदिर :— घुमरमुंडपारा बस्तर

47. षिव मंदिर :— गुमड़पाल बस्तर

48. षिव मंदिर :– छिंदगांव बस्तर

49. प्राचीन भग्न ईंटों के मंदिर :– गढ़ धनोरा कोण्डागांव

50. बुद्ध चैत्य गष्ह :– भोंगापाल कोण्डागांव

51. बत्तीसा मंदिर :– बारसूर दंतेवाड़ा

52. षिव मंदिर :– देवटिकरा सरगुजा

53. देउर मंदिर :– महारानीपुर सरगुजा

54. देवी का मंदिर (छेरिका देउर) :– देवटिकरा सरगुजा

55. सतमहला मंदिर समूह :– कलचा–भदवाही सरगुजा

56. भग्न मंदिर (षाला भवन के पास) :– डीपाडीह बलरामपुर

57. भग्न मंदिर (रानी तालाब के पास) :– डीपाडीह बलरामपुर

58. षिव मंदिर :– बेलसर बलरामपुर

59.सुरंगटिला मंदिर :– सिरपुर, महासमुंद

इकाई– 3

छत्तीसगढ़ के प्रमुख राश्ट्रीय उद्यान

छत्तीसगढ़ में राश्ट्रीय उद्यानों की सूची

छत्तीसगढ़ में तीन राश्ट्रीय उद्यान हैं जो राज्य की समष्द्ध जैव विविधता और प्राकृतिक सुंदरता को दर्षाते हैं। छत्तीसगढ़ के राश्ट्रीय उद्यानों के नाम और उनके बारे में कुछ रोचक तथ्य जानें।

के द्वारा प्रकाषित किया गयाआकांषा अरोड़ा अंतिम बार 6 अप्रैल, 2024 11:29 बजे अपडेट किया गया

छत्तीसगढ़ में राश्ट्रीय उद्यान

भारत के हृदय में बसा छत्तीसगढ़ राज्य न केवल अपनी समष्द्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है, बल्कि अपने लुभावने प्राकृतिक परिदृष्यों के लिए भी जाना जाता है। इसके कई खज़ानों में इसके राश्ट्रीय उद्यान भी षामिल हैं, जो विविध वनस्पतियों और जीवों के लिए आश्रय स्थल के रूप में काम करते हैं, जो जंगल की अदम्य सुंदरता की झलक पेष

Notes

करते हैं। इस लेख में, हम छत्तीसगढ़ के राश्ट्रीय उद्यानों की यात्रा करते हैं , जिनमें से प्रत्येक संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण के लिए राज्य की प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

छत्तीसगढ़ में कितने राश्ट्रीय उद्यान हैं

छत्तीसगढ़ में तीन राश्ट्रीय उद्यान हैं , जो राज्य की समष्द्ध जैव विविधता और प्राकृतिक सुंदरता को दर्षाते हैं। 1981 और 1982 के बीच स्थापित , ये संरक्षित क्षेत्र वनस्पतियों और जीवों की विभिन्न प्रजातियों के लिए महत्वपूर्ण आवास के रूप में काम करते हैं, जो संरक्षण प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं और प्रकृति प्रेमियों और षोधकर्ताओं को समान रूप से आकर्शित करते हैं।

छत्तीसगढ़ में राश्ट्रीय उद्यानों की सूची

छत्तीसगढ़ में तीन राश्ट्रीय उद्यान हैं, जो राज्य की समष्द्ध जैव विविधता और प्राकृतिक सुंदरता को दर्षाते हैं। यहाँ छत्तीसगढ़ के तीन राश्ट्रीय उद्यानों की सूची दी गई हैः

छत्तीसगढ़ में राश्ट्रीय उद्यान

क्र. सं.	राश्ट्रीय उद्यान	स्थापना
1.	गुरु घासीदास (संजय) राश्ट्रीय उद्यान	1981
2.	इंद्रावती (कुटरू) राश्ट्रीय उद्यान	1982
3.	कांगेर घाटी राश्ट्रीय उद्यान	1982

गुरु घासीदास राश्ट्रीय उद्यान

छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले में स्थित गुरु घासीदास राश्ट्रीय उद्यान , लगभग 1440.71 वर्ग किलोमीटर में फैला एक मनोरम स्थल है । 1981 में स्थापित, इसका नाम मूल रूप से श्रद्धेय सतनामी सुधारक, गुरु घासीदास के नाम पर रखा गया था। यह प्राचीन उद्यान हरे–भरे परिदृष्यों के बीच एक षांत विश्राम स्थल प्रदान करता है, जो क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता और सांस्कृतिक विरासत को दर्षाता है।

इंद्रावती राश्ट्रीय उद्यान

छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में स्थित इंद्रावती राश्ट्रीय उद्यान का नाम राजसी इंद्रावती नदी के नाम पर पड़ा है, जो महाराश्ट्र के साथ इसकी उत्तरी सीमा को चिह्नित करती है। यह प्रसिद्ध वन्यजीव अभयारण्य अपने प्रोजेक्ट टाइगर स्टेटस के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें उदंती–सीतानदी के साथ राज्य की तीन ऐसी साइटों में से एक है । लगभग 2799.08 वर्ग किलोमीटर में फैले इस अभयारण्य को 1981 में राश्ट्रीय उद्यान का दर्जा मिला और 1983

में इसे बाघ अभयारण्य घोशित किया गया , जो भारत में एक प्रमुख बाघ संरक्षण क्षेत्र के रूप में उभरा। यह लुप्तप्राय जंगली जल भैंसों की अंतिम बची हुई आबादी में से एक को आश्रय देने के लिए भी प्रसिद्ध है।

कांगेर घाटी राश्ट्रीय उद्यान

कांगेर घाटी राश्ट्रीय उद्यान जिसे कांगेर घाटी राश्ट्रीय उद्यान भी कहा जाता है , भारत के छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में स्थित है । जुलाई 1982 में स्थापित , यह लगभग 200 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है । तीरथगढ़ झरने से लेकर कोलाब नदी तक , यह लगभग 33. 5 किमी लंबाई और 6 किमी चौड़ाई में फैला हुआ है । केंद्रीय कांगेर नदी के नाम पर, यह पार्क अपने घने जंगलों, आष्चर्यजनक झरनों और आकर्शक चूना पत्थर की गुफाओं के लिए प्रसिद्ध है, जो इसे जैव विविधता के प्रति उत्साही लोगों के लिए एक आश्रय स्थल बनाता है। जगदलपुर षहर से 30 किमी दक्षिण–पूर्व में स्थित, यह छत्तीसगढ़ के राज्य पक्षी बस्तर पहाड़ी मैना का भी प्रिय निवास स्थान है।

छत्तीसगढ़ में वन्यजीव अभ्यारण्य और राश्ट्रीय उद्यान

अपने क्षेत्र के हिसाब से भारत का तीसरा सबसे बड़ा वन्य क्षेत्र वाला छत्तीसगढ़, वन्य संपदा से भरा हुआ हैं। छत्तीसगढ़ राज्य में 3 राश्ट्रीय उद्यान तथा 11 वन्यजीव अभ्यारण्य के साथ वर्तमान में छत्तीसगढ़ में 4 टाइगर रिजर्व है। जिसमे सन् 2009 में तीन टाइगर रिजर्व को मान्यता मिली, और एक बायोस्फियर भी हैं। छत्तीसगढ़ के वन्यजीव अभ्यारण्य में बाघ, षेर, चित्तल, वनभैंसा, गौर, नीलगाय इत्यादि वन्यजीव बहुतायत में पाया जाता हैं।

छत्तीसगढ़ के वन्यजीव अभ्यारण्य

1. बादलखोल अभ्यारण्य दृ जषपुर

छत्तीसगढ़ के जषपुर जिला में 104.35 वर्ग किमी. में फैले बादलखोल अभ्यारण्य को 28.08. 1975 में छत्तीसगढ़ के एक वन्यजीव अभ्यारण्य के रूप के चिन्हित किया गया था। यंहा पाए जाने वाले मुख्य रूप से वन्यजीवों में षेर, चिंकारा, तेंदुए, साम्भर, नीलगाय, चित्तल और विभिन्न पक्षियां षामिल हैं।

2. बारनवापारा अभ्यारण्य दृ बलौदाबाजार भाठापारा

छत्तीसगढ़ के बलौदाबाजार–भाठापारा जिला में 244.66 फैले बारनवापारा अभ्यारण्य को 21. 07.1976 में छत्तीसगढ़ के एक वन्यजीव अभ्यारण्य के रूप के चिन्हित किया गया था। यंहा पाए जाने वाले मुख्य रूप से वन्यजीवों में षेर, गौर, चिंकारा, तेंदुए, साम्भर, नीलगाय, चित्तल भालू, जंगली भैंसा और विभिन्न पक्षियां षामिल हैं।

3. सीतानदी अभ्यारण्य धमतरी

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिला में 553.36 वर्ग किमी. में फैले सीतानदी अभ्यारण्य को 01.11. 1974 में छत्तीसगढ़ के एक वन्यजीव अभ्यारण्य के रूप के चिन्हित किया गया था। यंहा

पाए जाने वाले वन्यजीवों में मुख्यतः षेर, चिंकारा, तेंदुए, साम्भर, नीलगाय, चित्तल, गौर, भालू, जंगली सुअर और विभिन्न पक्षियां षामिल हैं।

4. अचानकमार अभ्यारण्य मुंगेली

छत्तीसगढ़ के मुंगेली जिला में 551.55 वर्ग किमी. में फैले अचानकमार अभ्यारण्य को 01. 11.1974 में छत्तीसगढ़ के एक वन्यजीव अभ्यारण्य के रूप के चिन्हित किया गया था। यंहा पाए जाने वाले वन्यजीवों में मुख्यतः षेर, चिंकारा, तेंदुए, साम्भर, नीलगाय, चित्तल, गौर, भालू, माउस डियर और विभिन्न पक्षियां षामिल हैं।

5. सेमरसोत अभ्यारण्य सरगुजा

छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिला में 430.36 वर्ग किमी. में फैले सेमरसोत अभ्यारण्य को 20.02. 1978 में छत्तीसगढ़ के एक वन्यजीव अभ्यारण्य के रूप के चिन्हित किया गया था। यंहा पाए जाने वाले वन्यजीवों में मुख्यतः षेर, तेंदुए, साम्भर, नीलगाय, चित्तल, गौर, और विभिन्न पक्षियां षामिल हैं।

6. तमोरपिंगला अभ्यारण्य सूरजपुर

छत्तीसगढ़ के सूरजपुर जिला में 608.32 वर्ग किमी. में फैले तमोरपिंगला अभ्यारण्य को 20. 12.1978 में छत्तीसगढ़ के एक वन्यजीव अभ्यारण्य के रूप के चिन्हित किया गया था। यंहा पाए जाने वाले वन्यजीवों में मुख्यतः षेर, तेंदुए, साम्भर, नीलगाय, चित्तल, गौर और विभिन्न पक्षियां षामिल हैं।

7. भैरमगढ़ अभ्यारण्य बीजापुर

छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिला में 139 वर्ग किमी. में फैले भैरमगढ़ अभ्यारण्य को 01.03.1983 में छत्तीसगढ़ के एक वन्यजीव अभ्यारण्य के रूप के चिन्हित किया गया था। यंहा पाए जाने वाले वन्यजीवों में मुख्यतः षेर, तेंदुए, साम्भर, वनभैंसा, चित्तल और विभिन्न पक्षियां षामिल हैं।

8. पामेड़ धामेद अभ्यारण्य बीजापुर

छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिला में 262 वर्ग किमी. में फैले पामेड़ धामेद अभ्यारण्य को 16.03. 1983 में छत्तीसगढ़ के एक वन्यजीव अभ्यारण्य के रूप के चिन्हित किया गया था। यंहा पाए जाने वाले वन्यजीवों में मुख्यतः षेर, तेंदुए, साम्भर, चित्तल, वनभैंसा और विभिन्न पक्षियां षामिल हैं।

9. उदयन्ति अभ्यारण्य रायपुर

छत्तीसगढ़ के रायपुर जिला में 249.59 वर्ग किमी. में फैले उदयन्ति अभ्यारण्य को 09.03. 1983 में छत्तीसगढ़ के एक वन्यजीव अभ्यारण्य के रूप के चिन्हित किया गया था। यंहा

पाए जाने वाले वन्यजीवों में मुख्यतः षेर, तेंदुए, साम्भर, वनभैंसा, चित्तल, गौर, बैसन भालू, जंगली सुअर और विभिन्न पक्षियां षामिल हैं।

10. गोमरदा अभ्यारण्य   रायगढ़

छत्तीसगढ़ के गोमरदा जिला में 277.82 वर्ग किमी. में फैले गोमरदा अभ्यारण्य को 30.08. 1975 में छत्तीसगढ़ के एक वन्यजीव अभ्यारण्य के रूप के चिन्हित किया गया था। यंहा पाए जाने वाले वन्यजीवों में मुख्यतः षेर, तेंदुए, साम्भर, नीलगाय, चित्तल, गौर, भालू और विभिन्न पक्षियां षामिल हैं।

11. भोरमदेव अभ्यारण्य दृ कवर्धा (कबीरधाम)

छत्तीसगढ़ के कवर्धा जिला में 163.80 वर्ग किमी. में फैले सीतानदी अभ्यारण्य को 2001 में छत्तीसगढ़ के एक वन्यजीव अभ्यारण्य के रूप के चिन्हित किया गया था। यंहा पाए जाने वाले वन्यजीवों में मुख्यतः बाघ, तेंदुए, साम्भर, नीलगाय, चित्तल और विभिन्न पक्षियां षामिल हैं।

छत्तीसगढ़ के राश्ट्रीय उद्यान

1. इंद्रावती राश्ट्रीय उद्यान दृ बीजापुर

छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिला में 2799.08 वर्ग किमी. में फैले इंद्रावती राश्ट्रीय उद्यान को 17. 02.1982 में स्थापित छत्तीसगढ़ में एक राश्ट्रीय उद्यान के रूप के चिन्हित किया गया था। 1983 में इसे टाईगर रिजर्व भी घोशित किया गया था। यंहा पाए जाने वाले वन्यजीवों में मुख्यतः बाघ, तेंदुए, साम्भर, चित्तल, गौर, जंगली भैंसा, मोर और विभिन्न पक्षियां षामिल हैं।

2. कांगेर घाटी राश्ट्रीय उद्यान दृ बस्तर

छत्तीसगढ़ के बस्तर जिला में 200 वर्ग किमी. में फैले कांगेर घाटी राश्ट्रीय उद्यान को 20. 07.1982 में स्थापित छत्तीसगढ़ में एक राश्ट्रीय उद्यान के रूप के चिन्हित किया गया था। यंहा पाए जाने वाले वन्यजीवों में मुख्यतः बाघ, तेंदुए, साम्भर, चित्तल, पहाड़ी मैना और विभिन्न पक्षियां षामिल हैं।

3. गुरु घांसीदास राश्ट्रीय उद्यान दृ कोरिया

छत्तीसगढ़ के कोरिया जिला में 1440.705 वर्ग किमी. में फैले गुरु घासीदास राश्ट्रीय उद्यान को 23.09.1981 में संजय राश्ट्रीय उद्यान के रूप में स्थापित जिसे 2001 से छत्तीसगढ़ में गुरु घासीदास राश्ट्रीय उद्यान के रूप के चिन्हित किया गया था। यंहा पाए जाने वाले वन्यजीवों में मुख्यतः बाघ, तेंदुए, साम्भर, चित्तल, गौर, जंगली भैंसा, निलगाय और विभिन्न पक्षियां षामिल हैं।

छत्तीसगढ़ के टाइगर रिजर्व

1. इंद्रावती टाइगर रिजर्व (इंद्रावती राश्ट्रीय उद्यान) दृ यहाँ प्रोजेक्ट टाइगर 1983 में षुरू हुआ था।

2. उदयन्ति टाइगर रिजर्व (उदयन्ति अभ्यारण्य) दृ यहाँ प्रोजेक्ट टाइगर 2006 मे हुआ षुरू था।

3. अचानकमार टाइगर रिजर्व (अचानकमार अभ्यारण्य) दृ यहाँ प्रोजेक्ट टाइगर 2006 में षुरु हुआ था।

4. गुरु घासीदास टाइगर रिजर्व (गुरु घासीदास राश्ट्रीय उद्यान) दृ यंहा 2014 में नेषनल टाइगर कंजर्वेषन अथॉरिटी ने गुरु घासीदास टाइगर रिजर्व के गठन के लिए अपनी सहमति दे दिया था।

छत्तीसगढ़ के बायोस्फीयर

छत्तीसगढ़ राज्य में सिर्फ एक बायोस्फीयर है अचानकमार, जिसकी स्थापना 2005 में की गईं थी। जो देष का 14 वाँ बायोस्फीयर है। इससे पहले 1985 में कांगेर घाटी को बायोस्फीयर बनाने की घोशणा की गई थी, लेकिन स्थापित ना हो सका।

छत्तीसगढ़ की वन्यजीव अभ्यारण्य से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारीकृ

- छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा अभ्यारण्य दृ तमोर पिंगला अभ्यारण्य सरगुजा में है, जिसका क्षेत्रफल 608.32 वर्ग किमी. है।
- छत्तीसगढ़ का सबसे छोटा अभ्यारण्य बादलखोल, जषपुर में है, इसका क्षेत्रफल 104. 35 वर्ग किमी. है।
- सर्वाधिक मोर उदयन्ती अभ्यारण्य में मिलते हैं।
- छत्तीसगढ़ षासन ने ऑपरेषन एलीफेन्ट 1 जनवरी, सन् 2003 से प्रारम्भ किया था, जिसके तहत उत्पाती जंगली हाथियों को पकड़ने के लिए व प्रषिक्षित करने की जिम्मेदारी असम के प्रसिद्ध हाथी विषेशज्ञ पार्वती बरुआ को दिया गया था।
- प्राणी संरक्षण के लिए 6615 वर्ग किमी. क्षेत्र आरक्षित है।
- राज्य पक्षी पहाड़ी मैना को बस्तर संभाग में देखा जा सकता है।
- छत्तीसगढ़ के राज्य का पषु वन भैंसा उदयन्ती अभ्यारण्य में पाया जाता है। साथ ही पामेड़ और भैरमगढ़ में भी वन भैंसे अधिक संख्या में है।
- कांकेर घाटी राश्ट्रीय उद्यान, जगदलपुर में दुर्लभ स्टेलेग्माइट गुफाएँ हैं।
- छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक सोन कुन्ता बारनवापारा अभ्यारण्य में मिलते हैं।

- भोरमदेव, कवर्धा राज्य के नवीन अभ्यारण्य हैं।
- छत्तीसगढ़ का टाइगर प्रोजेक्ट राश्ट्रीय उद्यान इन्द्रावती राश्ट्रीय उद्यान बीजापुर है।
- छत्तीसगढ़ में सर्वाधिक तेन्दुए, सीतानदी अभ्यारण्य, साम्भर बारनवापारा अभ्यारण्य वन भैंसा दृ उदयन्ती, अभ्यारण्य , नीलगाय , तमोर पिंगला अभ्यारण्य में पाये जाते हैं।
- वन्य प्राणियों व पक्षियों के षिकार पर पूर्ण प्रतिबन्ध 24 अक्टूबर, सन् 1982 से अघोशित है।
- छत्तीसगढ़ के उद्यानों व अभ्यारण्यों में सर्वाधिक पाया जाने वाला वन्य जीव चीतल है।
- छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा राश्ट्रीय उद्यान गुरु घासीदास राश्ट्रीय उद्यान है।
- संजय राश्ट्रीय उद्यान का नाम अब गुरु घासीदास राश्ट्रीय उद्यान रखा गया है।
- गुरु घासीदास राश्ट्रीय उद्यान का क्षेत्रफल 1440.707 वर्ग कि.मी. है। उद्यान का षेश हिस्सा म.प्र. के सीधी जिले में पड़ता जिसका क्षेत्रफल 497.309 वर्ग

Notes

इकाई – 4

छत्तीसगढ़ की प्रमुख नदियाँ

छत्तीसगढ़ की नदियां :

चार अपवाह तंत्र महानदी, गंगा, गोदावरी, नर्मदा है। जिसके अंतर्गत महानदी, षिवनाथ,अरपा, इंद्रावती, सबरी, लीलागर, हसदो, मांड, पैरी तथा सोंढूर प्रमुख नदियां है। महानदी छत्तीसगढ़ की जीवन रेखा है।

बस्तर की नदियों को छोड़कर छत्तीसगढ़ की अन्य प्रमुख नदियां दृ षिवनाथ, अरपा, हसदो, सोंढूर, जोंक आदि महानदी में मिलकर इस नदी का हिस्सा बन जाती है।

महानदी तथा इसकी सहायक नदियां पुरे छत्तीसगढ़ का 58.48 प्रतिषत जल समेट लेती है।

षिवनाथ नदी

यह महानदी की सहायक नदी है। यह राजनांदगांव जिले की अंबागढ़ तहसील की 625 मीटर ऊंची पानाबरस पहाड़ी क्षेत्र कोडगुल से निकलकर बलौदाबाजार तहसील के पास महानदी में मिल जाती है। इसकी प्रमुख सहायक नदियां लीलागर, मनियारी, आगर, हांप सुरही, खारुन तथा अरपा आदि हैं। इसकी कुल लम्बाई 290 किमी है। मोंगरा बैराज परियोजना इसी नदी में है।इसका अन्य नाम सीनू या षिवा है।

हसदेव नदी

यह महानदी की दूसरी सबसे लंबी सहायक नदी है तथा कोरबा के कोयला क्षेत्र में तथा चांपा मैदान में प्रवाहित होने वाली प्रमुख नदी है। यह नदी कोरिया जिले की देवगढ़ की पहाड़ी, कैमूर पर्वत से निकलकर कोरबा, जांजगीर–चांपा जिलों में बहती हुई षिवरीनारायण से पहले सिलादेही (केरा) महानदी में मिल जाती है। हसदो का अधिकांष प्रवाह क्षेत्र ऊबड़–खाबड़ है। गज,अहिरण, जटाषंकर,चोरनई,तान,झिंग और उत्तेग नदी हसदेव नदी की प्रमुख सहायक नदियां हैंद्य पीथमपुर (जांजगीर चांपा) हसदेव नदी के तट पर ही स्थित हैद्य इस नदी पर कोरबा में हसदोव बांगो परियोजना (मिनीमाता परियोजना 1964) संचालित है तथा इस नदी पर छत्तीसगढ़ का सबसे ऊंचा बांध (87 मीटर) बनाया गया है द्यइसकी कुल लंबाई 176 किलोमीटर है।

अरपा नदी

इसका उद्गम जिला गौरेला पेण्ड्रा मरवाही के पठार की पहाड़ी से हुआ है। इसका उद्गम गौरेला विकासखंड के ग्राम खोडरी के समीप है या पेंड्रा विकासखंड के ग्राम अमरपुर के समीप, इस पर मतभेद है। धरातल पर भौगोलिक रूप से इसका उद्गम ग्राम खोडरी के समीप दिखता है। अरपा नदी छत्तीसगढ़ के षहर बिलासपुर की जीवन रेखा है। यह

महानदी की सहायक नदी है। यह खोडरी, बेलगहना, बिलासपुर होते हुए प्रवाहित होती है और बरतोरी के निकट ठाकुर देवा नामक स्थान पर षिवनाथ नदी में मिल जाती है। इसकी लम्बाई 147 किलोमीटर है।

रेणुका नदी

यह सरगुजा,जिला(अंबिकापुर)के मतरिंगा पहाड़ी से निकलती है। बलरामपुर जिला से होते हुए सोन नदी में मिल जाती है,यह नदी सरगुजा की जीवन रेखा कहलाती है इस नदी पर यूपी के मिर्ज़ापुर जिला में सरदार वल्लभपंत सागर बांध बनाया गया है। रेणुका,गोबरी,दबरिया,घुंघुता आदि इसकी सहायक नदियां है। रेणुका नदी पर रकषगंडा जलप्रपात है। इसके अलावा इस नदी के किनारे महेषपुर(सरगुजा) प्राचीन स्थल स्थित है। रेणुका नदी को रिहंद नदी,रेड नदी अरण्य नदी आदि नामों से भी जाना जाता है।

खारुन नदी

यह महानदी की सहायक नदी है। यह दुर्ग संभाग के बालोद जिले के सजारी क्षेत्र से निकलकर षिवनाथ नदी में मिलती है। इस नदी की लम्बाई 208 कि॰मी॰ है तथा प्रवाह क्षेत्र 22,680 वर्ग किलोमीटर है।

मनियारी नदी

यह नदी बिलासपुर के उत्तर–पष्चिम में लोरमी पठार से निकलती है। इसका उद्‌गम स्थल मुखण्डा पहाड़ बेलपान के कुण्ड तथा लोरमी का पहाड़ी क्षेत्र है। यह दक्षिणी–पूर्वी भाग में बिलासपुर तथा मुंगेली तहसील की सीमा बनाती हुई प्रवाहित होती है। आगर, छोटी नर्मदा तथा घोंघा इसकी सहायक नदियां हैं। इस नदी पर खारंग मनियारी जलाषय का निर्माण किया गया है, जिससे मुंगेली तहसील के 42.510 हेक्टेअर क्षेत्र में सिंचाई की जाती है। इस नदी की कुल लंबाई 134 किलोमीटर है।

लीलागर नदी

इस नदी का उद्‌गम कोरबा की पूर्वी पहाड़ी से हुआ है। यह कोरबा क्षेत्र से निकलकर दक्षिण में बिलासपुर और जांजगीर तहसील की सीमा बनाती हुई षिवनाथ नदी में मिल जाती है। इस नदी की कुल लंबाई 135 किलोमीटर और प्रवाह क्षेत्र 2.333 वर्ग किलोमीटर है।

इन्द्रावती नदी

इन्द्रावती गोदावरी की सबसे बड़ी सहायक नदी है। यह बस्तर की जीवनदायिनी नदी है। यह इस संभाग की सबसे बड़ी नदी है। इसका उद्‌गम उड़ीसा राज्य में कालाहाण्डी जिले के युआमल नामक स्थान में डोगरला पहाड़ी से हुआ है। यह आंध्रप्रदेष में जाकर गोदावरी नदी में मिल जाती है। जगदलपुर षहर इसी नदी के तट पर बसा हुआ है। इस नदी का प्रवाह क्षेत्र 26.620 वर्ग किलोमीटर है और लम्बाई 372 किलोमीटर है। डंकिनी और षंखिनी नदी – ये दोनों इन्द्रावती की सहायक नदियां है।

कोटरी नदी

यह इन्द्रावती की सबसे बड़ी सहायक नदी है। इसका उद्गम दुर्ग जिले से हुआ है। इसका अप्रवाह क्षेत्र दक्षिण–पष्चम सीमा पर राजनांदगांव की उच्च भूमि पर है।

डंकिनी नदी किलेपाल एवं पाकनार की डांगरी–डोंगरी से तथा षंखिनी नदी बैलाडीला की पहाड़ी के 4,000 फीट ऊंचे नंदीराज षिखर से निकलती है। इन दोनों नदियों का संगम दन्तेवाड़ा में होता है।

उद्गम – मोहला तहसील (राजनांदगांव)

बाघ नदी

यह नदी चित्रकूट प्रपात के निकट इन्द्रावती नदी से मिलती है।

––गुडरा नदी

यह नदी छोटे–डोंगर की चट्टानों के बीच अबूझमाड़ की बनों से घिरी हुई पहाड़ियों से प्रवाहित होती है।

मारी नदी

यह नदी दक्षिण–पष्चिम दिषा में भैरमगढ़ से निकलकर बीजापुर की ओर प्रवाहित होती है। इसे मोरल नदी भी कहते हैं।

सबरी नदी

यह दन्तेवाड़ा के निकट बैलाडीला पहाड़ी से निकलती है और कुनावरम् (आन्ध्रप्रदेष) के निकट गोदावरी नदी में मिल जाती है। बस्तर जिले में इसका प्रवाह क्षेत्र 180 किलोमीटर है।

तांदुला नदी

यह नदी कांकेर जिले के भानुप्रतापपुर के उत्तर में स्थित पहाड़ियों से निकलती है यह षिवनाथ की प्रमुख सहायक नदी है। इसकी लम्बाई 64 किलोमीटर है। तांदुला बांध इसी नदी पर बालोद तथा आदमाबाद के निकट बनाया गया है। इससे पूर्वी भाग में नहरों से सिंचाई होती है।

पैरी नदी

यह महानदी की सहायक नदी है। भातष्गढ़ पहाड़ी, तहसील बिंद्रानवागढ़, जिला गरियाबंद से निकलकर महानदी में राजिम में आकर मिलती है। इसकी प्रमुख सहायक नदी सोंढूर है जो कि नरियल पानी से निकलती हैद्य पैरी नदी पर सिकासार परियोजना(1995)और सोंढूर नदी पर सोंढूर परियोजना (1979–80) संचालित हैद्य इसकी लम्बाई 90 किलोमीटर है तथा प्रवाह क्षेत्र 3,000 वर्ग मीटर है।

जोक नदी

यह नदी रायपुर के पूर्वी क्षेत्र का जल लेकर षिवरीनारायण जांजगीर चाम्पा ठीक विपरीत दक्षिणी तट पर महानदी में मिलती है। इसकी रायपुर जिले में लम्बाई 90 किलोमीटर है तथा इसका प्रवाह क्षेत्र 2,480 वर्ग मीटर है।

माण्ड नदी

सरगुजा जिले के मैनपाट से निकलकर यह सरगुजा,रायगढ़,जषपुर की सीमा से होते हुए जांजगीर–चांपा जिलों में बहती हुई चन्द्रपुर (महानदी+मांड+लात) में महानदी से मिल जाती है। कुरकुट एवं कोइराज नदी माण्ड नदी की सहायक नदी हैद्य माण्ड नदी घाटी कोयला प्राप्ति का क्षेत्र हैद्य इसकी लम्बाई 155 किलोमीटर है।

छत्तीसगढ़ के प्रमुख जलप्रपात

छत्तीसगढ़ में कई सुंदर जलप्रपात हैं, जो अपनी नैसर्गिक सुंदरता और ऊंचाई के लिए प्रसिद्ध हैं।

छत्तीसगढ़ की नदियाँ और जलप्रपात राज्य के पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और राज्य के पर्यटन और जैव विविधता के लिए भी अत्यंत आवष्यक हैं।

छत्तीसगढ़ के प्रमुख जल प्रपात

चित्रकोट

जगदलपुर से 39 किलोमीटर दूर इन्द्रावती नदी पर यह जलप्रपात बनता है। समीक्षकों ने इस प्रपात को आनन्द और आतंक का मिलाप माना है। 90 फुट उपर से इन्द्रावती की ओजस्विन धारा गर्जना करते हुये गिरती है। इसके बहाव में इन्द्रधनुश का मनोरम दृष्य, आल्हादकारी है। यह बस्तर संभाग का सबसे प्रमुख जलप्रपात माना जाता है। जगदलपुर से समीप होने के कारण यह एक प्रमुख पिकनिक स्पाट के रूप में भी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है।

बस्तर में झरनों की कमी नहीं है. यहां तकरीबन हर 60 से 70 किलोमीटर के अंतराल में आपको वाटरफाल मिल जाएंगे, लेकिन इनमें से कई ऐसे हैं जिन तक आज भी कोई सैलानी नहीं पहुंच पाया है. बस्तर का तीरथगढ़ जलप्रपात भी देषभर में काफी मषहूर है. यहां पहाड़, जल और जंगल का ऐसा अनूठा संगम है जहां हर प्रकृति प्रेमी खुद को पहुंचने से रोक नहीं पाता. बस्तर पहुंचने वाला हर सैलानी चित्रकोट के साथ–साथ तीरथगढ़ जलप्रपात भी जरूर पहुंचता है. इसे अगर दूध का झरना भी कहा जाए तो गलत नहीं होगा. चित्रकोट से इसकी दूरी करीब 57 किलोमीटर है. तीरथगढ़ एक ऐसा वॉटरफाल है जहां दो नदियों का संगम

भी होता है. दो सहायक नदियां मुनगा और बहार यहां एक होकर सैलानियों के लिए एक मनोरम दृष्य का निर्माण करती है.

तीरथगढ़ में दरअसल एक नहीं, बल्कि दो–दो झरने है, जो एक के बाद एक पहाड़ों और घने जंगलों के बीच भू–भाग में गिरती है. मजे की बात तो ये यहां दोनों ही झरनों की खूबसूरती को बेहद करीब से निहार सकते हैं. घरे वक्षों के बीच पहाड़ों पर बनी सीढ़ियों की मदद से आप गहरी खाई में भी उतर सकते हैं, जहां से मुनगा–बहार नदी के सफर की षुरूआत होती है. तीरथगढ़ जलप्रपात को भारत के सबसे ऊंचे वॉटरफाल्स में गिना जाता है. इसकी ऊंचाई करीब 300 फीट है. यहां प्रकृति की सुंदरता हर रूप में विराजमान है. जहां बस पर्यावरण में खो जाने का मन करता है. यहां आदिवासियों की जिंदगी वैसे तो जरा भी आसान नहीं, लेकिन बस्तर आने पर बस्तरिया हो जाने का मन करता है. षांत माहौल में चिड़ियों की चहचहाहट, 300 फीट की ऊंचाई से गिरता झरना, खूबसूरती की मिसाल पेष करते हरे–भरे पेड़ और बरसाती बूंदों का गिले पत्तों से गिरनाकृ ये सब कुछ आपको एक साथ बस्तर में मिलेंगे. तीरथगढ़ जल प्रपात में मिलेंगे.

(1)छत्तीसगढ़ के पहचान की बात हो और बस्तर का नाम ना लिया जाए ऐसा हो ही नहीं सकता. बस्तरकृ वैसे तो बस्तर को जानने वालों के लिए इसका नाम ही काफी है. पहाड़ों, जंगलों, झरनों और नदियों से घिरा ये इलाका अपने आंचल में कई राज समेटे हुआ है. यहां की संस्कृति, सभ्यता, आदिवासियों का रहन–सहन अपने आप में ही अनूठा है, लेकिन जो लोग बस्तर को नहीं जानते उन्हें यहां सिर्फ लाल आतंक यानी नक्सलियों का साया ही नजर आता है. प्रकृति के असली सौंदर्य को अपने रोम–रोम में समेटे बस्तर में जंगलों के बीच इतने झरने हैं, जहां आज भी सैलानी पहुंच नहीं पाए हैं.

समय के साथ–साथ बस्तर के वो राज भी खुल रहे हैं, जो इतने दिलचस्प और रोचक है कि उसे एक्सप्लोर करने दूसरे राज्यों से भी घुमक्कड़ी कहें या रमता जोगी यहां पहुंच ही जाते हैं. वैसे तो बस्तर को जानने और समझने के लिए काफी कुछ है, लेकिन षुरूआत हमेषा चित्रकोट जलप्रपात से होती है. बस्तर के 16 श्रिंगारों में से एक है चित्रकोट जलप्रपात. चित्रकोट वाटरफाल, 90 फीट की ऊंचाई से गिरता ये झरना इंद्रावती नदी की खूबसूरती पर चार चांद लगा देता है. देषभर में ये जलप्रपात नियाग्रा फॉल के नाम से भी जाना जाता है. यहां तक पहुंचने के लिए सबसे पहले आपको जगदलपुर पहुंचना होगा. यहां से केवल 40 किलोमीटर दूर आपको प्राकृतिक सौंदर्य का ये अनोखा और मनमोहक संगम नजर आएगा. इस बीच सफर में आप ये कहने से खुद को रोक नहीं पाएंगे कि वाकई प्रकृति ने यहां हर कदम को बड़ी ही खूबसूरती और फुर्सत से बनाया है. यहां घूमने के लिए सबसे अच्छा समय मानसून का होता है. क्योंकि इन दिनों इंद्रावती नदी अपने उफान पर होती है. चित्रकूट जलप्रपात देष का सबसे चौड़ा वाटरफाल है. बारिष के मौसम में इसकी चौड़ाई 150 मीटर होती है. रात की खामोषी में झरने की आवाज आपको 3 से 4 किलोमीटर दूर भी सुनाई देगी. मानों पानी की हर एक बूंद चीख–चीख कर चित्रकूट से गिरने की गौरवगाथा का गान कर रही हो.

चित्रकोट जलप्रपात वैसे तो हर मौसम में दर्षनीय है, लेकिन बारिष के दिनों में इसे देखना अधिक रोमांचकारी अनुभव होता है. वर्शा में ऊंचाई से विषाल जलराषि की गर्जना रोमांच और सिहरन पैदा कर देती है. पर्यटकों के यहां आने के लिए जुलाई–अक्टूबर के बीच का समय सबसे सही होता है. चित्रकोट जलप्रपात के आसपास घने जंगल हैं जो उसकी प्राकृतिक सौंदर्यता को और बढ़ा देती है. रात के अंधेरे में भी आप झरने का रोमांच ले सकते हैं, क्योंकि यह जगह रोषनी के साथ सुसज्जित किया हुआ है. अलग–अलग अवसरों पर इस जलप्रपात से कम से कम तीन और अधिकतम सात धाराएं गिरती हैं. झरने के किनारे पर एक विषालकाय षिवलिंग और महादेव का मंदिर भी है. जो हाल फिलहाल में ही बनाया गया है, लेकिन झरने के नीचे अगर आप जाएं तो सैकड़ों की संख्या में छोटे–छोटे षिवलिंग मिलेंगे. इनमें से कई षिवलिंग प्राचीन काल के भी मानें जाते हैं, जिनके ऊपर झरने का पानी सीधे आकर गिरता है, मानों भगवान षिव का जलाभिशेक हो रहा हो. चित्रकोट जलप्रपात की सुंदराता को करीब से निहारने के लिए यहां बोटिंग का आनंद भी ले सकते हैं. नदी में उतरकर 90 फीट की ऊंचाई से गिरते विषाल जलधारा को देखना और उसे महसूस करना थोड़ा डरावना जरूर, लेकिन उत्साह से भरपूर होता है.

सातधारा

इन्द्रावती नदी पर स्थित यह प्रपात सात धाराओं के रूप में नीचे गिरता है। यह जगदलपुर से 68 किलोमीटर दूर बारसूर नगरी से सात किलोमीटर के अन्तराल में अवस्थित है। यह भेड़ाघाट की तरह दर्षनीय है। सात धाराएं क्रमषः १.बोधधारा, २.कपिल धारा, ३.पांडवधारा, ४.कृश्णधारा, ५.षिवधारा, ६.षिवचित्र धारा ७. बाण धाराद्य

महादेव धूमर प्रपात

जगदलपुर से 27 किलोमीटर दूर मावली भाटा के पुजारी पारा पर प्रपात स्थित है। षीतकाल में यह अत्यधिक दर्षनीय है। बस्तरवासी इसे तीरथगढ़ जलप्रपात का गुरु जलप्रपात कहते हैं।

चर्रे–मर्रे झरना

छत्तीसगढ़ की खूबसूरती का जवाब नहीं है। छत्तीसगढ़ में बस्तर के जंगलों में अनेकों जलप्रपात छिपे हुए हैं। जो समय के साथ उभरकर सामने आ रहे हैं. उन्हीं में से एक है चर्रे–मर्रे झरना। यह कांकेर जिले में अंतागढ़ से 15 किलोमीटर दूर स्थित है। छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले में अंतागढ़ ब्लाक से 17 किलोमीटर दूर स्थित,जोगी नदी पर चर्रे–मर्रे जलप्रपात छत्तीसगढ़ में एक और अद्भुत झरना है। इस झरने का मुख्य स्रोत जोगीधारा नदी है, जो मटला घाटी में बहती है जिसे स्थानीय लोगों द्वारा अंतागढ़ नदी या कुत्री नदी भी कहा जाता है। इस झरने को कांकेर जिले के गहना या मुकुट के रूप में भी जाना जाता है। यह एक 16 मीटर ऊंचे जिग जैग झरना है जो दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्शित करता है। चैरे–मैरे जलप्रपात को देखने के लिए सबसे अच्छा समय अक्टूबर से दिसंबर तक है। मनोरंजन और पिकनिक के लिए यह जगह बहुत आदर्ष है।

Notes

चर्रे–मर्रे झरना, कांकेर की एक जोगी नदी पर स्थित टेढ़ी–मेढ़ी झरना है। कांकेर जिला छत्तीसगढ़ के दक्षिणी क्षेत्र में स्थित है। यह पहले पुराने बस्तर जिले का एक हिस्सा है। पांच नदिया जिले कि प्रवाह के माध्य से गुजरती हैं। ये पांच नदिया महानदी नदी, तुरु नदी, सिन्दुर नदी, दूध नदी और हतकुल नदी हैं। जिले की अर्थव्यवस्था कृशि पर आधारित है और क्षेत्र की मुख्य फसल धान है। क्षेत्र की अन्य महत्वपूर्ण फसलें हैं –मटर, चना, कोदो, रागी, उड़द,मूंग,तिल,रामतिल और गेहूं इत्यादि हैं।

झरना चर्रे–मर्रे, छत्तीसगढ़ मे प्राचीन काल से सबसे सुंदर और सुरम्य झरनो मे से एक है। इस खूबसूरत झरना का एक बड़ा पैमाने है भीड़ खिचना और सदियों से पर्यटकों को आकर्शित करना। चर्रे–मर्रे झरना, कांकेर एक सोलह मीटर उच्च जोगी नदी पर टेढ़ी–मेढ़ी झरना है। भारत के छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले में छर्रे–मर्रे झरना अंतगढ़ से 17 किलोमीटर दूर आमबेरा के रास्ते पर है। यहा दुनिया भर से और भारत भर से हर साल हजारों पर्यटकों के लिए यह सुंदर और सुरम्य झरना है।

तीरथगढ़ जलप्रपात :–

कांगेर घाटी के जादूगर के नाम से मषहूर तीरथगढ़ जलप्रपात जगदलपुर से 29 किमी. दूरी पर स्थित है । यह राज्य का सबसे ऊंचा जलप्रपात है यहां 300 फुट ऊपर से पानी नीचे गिरता है कांगेर और उसकी सहायक नदियां मनुगा और बहार मिलकर इस सुंदर जलप्रपात का निर्माम करती है । विषाल जलराषि के साथ इतनी ऊंचाई से भीशण गर्जना के साथ गिरती सफेद जलधारा यहां आए पर्यटकों को एक अनोखा अनुभव प्रदान करती है। तीरथगढ़ जलप्रपात को देखने का सबसे अच्छा समय बारिष के मौसम के साथ–साथ अक्टूबर से अपैल तक का है।

कांगेर धारा जलप्रपात–

बस्तर जिले में कांगेर घाटी राश्ट्रीय उद्यान में स्थित इस जलप्रपात की ऊंचाई 20 फुट है । कांगेर घाटी से होकर गुजरने वाली कांगेर नदी पर स्थित इस जलप्रपात का पानी स्वच्छ रहता है इस नदी के भैसादरहा नामक स्थान पर मगमच्छ प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं ।

हाथीदरहा जलप्रपात :–

चित्रकोट बारसूर मार्ग पर सेंदरी गांव में स्थित है हाथी दरहा जलप्रपात । गांव के निकट मटरानाला पर ऊंचाई से गहरी खाई में गिरने वाले इस जलप्रपात की खूबसूरती दूर–दूर तक फैली खाईयां और बढ़ा देती है । इस मेंदरी धूमर जलप्रपात भी कहा जाता है।

तामड़ा जलप्रपात :

बस्तर जिले के चित्रकोट के तीन कि.मी. पहले दक्षिण–पष्चिम दिषा में तामड़ा जलप्रपात स्थित है यहां तामड़ा बहार नदी का पानी करीब 125 फुट की ऊंचाई से नीचे गिरता है।

चित्रधारा जलप्रपात :–

बस्तर जिले में जगदलपुर से 13 कि.मी. दूर करंजी गांव के समीप एक पहाड़ी से खंड–खंड में गिरते पानी वाला यह आकर्शक जलप्रपात है । यह जलप्रपात आसपास के लोगों के लिए पर्यटन का प्रमुख स्थल है।

महादेव धूमर जलप्रपात :

जगदलपुर से 27 कि.मी. दूरी पर स्थित ग्राम मावलीभाठा में महादेव घूमर स्थित है । इसे पुजारी पारा जलप्रपात भी कहा जाता है । यह कई षिलाखंडों से होता हुआ 15–20 फुट ऊंचाई से गहरी खाई में चला जाता है।

सप्तधारा जलप्रपात :

दन्तेवाड़ा में इंद्रावती नदी पर स्थित सप्तधारा जलप्रपात छत्तीसगढ़ का अत्यंत रमणीय पर्यटन स्थल है । यह जलप्रपात बोधघाट पहाड़ी से गिरते हुए क्रमषः बोध धारा, कपिलधारा पाण्डव धारा, कृश्णधारा षिव,धारा बाणधारा और षिवार्चन धारा नामक सात धाराओं का निर्माण करता है। सघन वन में होने के कारण सप्तधार जलप्रपात की रमणीयता और भी बढ़ जाती है।

रानीदरहा जलप्रपातः

दंतेवाड़ा जिले की कोंटा तहसील में स्थित है रानीदरहा जलप्रपात विकासखंड मुख्यालय छिंदगड़ से 30 कि.मी. दूरी पर षबरी पार गांव के समीप स्थित इस जलप्रपात का प्राकृतिक सौंदर्य दर्षनीय है। रानी दरहा के आसपास षबरी नदी का जल गहरा होने के कारण थमा–सा नजर ाता है, जो कि इस जलप्रपात की सुंदरता में और चार चांद लगा देता है।

मलजकुण्डलम जलप्रपात :

यह जल प्रपात कांकेर जिला मुख्यालय से दक्षिण–पष्चिम में 17 कि.मी. की दूरी पर दूधनदी पर स्थित है। यहां पहाड़ी पर स्थित एक कुंड से नीचे गिरती जलधारा अलौकिक दृष्य पैदा करती है। साफ–सुथरा जल नीचे गिरते समय दूधिया धारा का अहसास कराता है।

मंडवा जलप्रपातः

यह जलप्रपात बसतर जिले में राश्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 43 पर जगदलपुर से 22 किमी. दूरी पर कोलाब नदी पर स्थित है । गुप्तेश्वर नामक स्थान पर प्राकृतिक रूप से बने सि जलप्रपात का सुंदरता अप्रतिम है।

खुरसेल जलप्रपातः

नारायणपुर जिले में स्थित खुरसेल घाटी अंग्रेजों के जमाने से अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्घ रहा है । यहां गुड़ाबेड़ा से करीब 9 कि.मी. की दूरी पर स्थित खुरसेल

Notes

जलप्रपात में करीब 400 फुट की ऊंचाई से गिरते हुए कई खण्डों में कुण्डों का निर्माण करता हुआ। यहां एक ओर वष्हत आकार के षिलाखण्डों की सुदरता है तो दूसरी ओर तेज चट्टानी ढाल से नीचे गिरता पानी । मल्गेर इंदुल जलप्रपात : यह जलप्रपात दंतेवाड़ा के कोंटा तहसिल में स्थित है । बैलाडीला पहाडि़यों से निकलने वाली मल्गेर नदी पर स्थित इस पर्वतीय जलप्रपात का प्राकृतिक सौंदर्य अद्‌भुत है।

बोग्तुम जलप्रपातः

दंतेवाड़ा जिले में भोपालपटनम् के निकट पोड़सपल्ली गांव की पहाडि़यों में स्तित है यह प्राकृतिक जलप्रपात ।

पुलपाड़ इंदुल जलप्रपात :–

बैलाडीला से पहले दंतेवाड़ा जिला मुख्यालय से सुकमा मार्ग पर नकुलनार के निकट पुलपाड़ गांव में स्थित झरना को पुलपाड़ इंदुल के नाम से जाना जाता है । यहां पहाडि़यों से गिरती कई धाराओं में बंटी जलराषि जलप्रपात के सौंदर्य को कई गुना बढ़ा देती है ।

केंदई जल प्रपातः

कोरबा जिले के साल के घने वन प्रदेष से घिरे केन्दई गांव में यह जल प्रपात स्थित है यहां एक पहाड़ी नदी करीब 200 फुट की ऊंचाई से नीचे गिरकर इस जलप्रपाच का निर्माण करती है। इस जलप्रपात को पास में स्थित विषाल षिलाखंड से इस जलप्रपात को देखना एक अलग ही अनुभव प्रदान करता है ।

कोठली जलप्रपात :

अंबिकापुर के विख्यात दर्षनीय स्थल डीपाडीह से 15 कि.मी. दूर उत्तरीदिषा में यह जलप्रपात स्थित है । कन्हार नदी में स्थित कोठली जलप्रपात अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण बरबस ही अपनी ओर ध्यान खींच लेता है ।

अमष्तधारा जलप्रपातः

कोरिया जिले के मनेन्द्रगढ़ तहसील में यह मनोहारी जलप्रपात स्थित है। यहां कोरिया की पहाडि़यों से निकलने वाली हसदो नदी अमष्तधारा जलप्रपात का निर्माण करती है। इस जलप्रपात का पानी स्वास्थ्य की दृश्टि से लाभदायी होने के कारण इस जलप्रपात का अपना महत्व है।

रक्सगण्डा जलप्रपात :

यह प्रसिद्‌घ जलप्रपात सरगुजा जिले के नलंगी नामक स्थान पर रेहन्द नदी पर स्थित है। यहां नदी का पानी ऊंचाई से गिरकर एक संकरे कुण्ड में समाता है । इस कुण्ड की गहराई बहुत अधिक है। इस कुण्ड से 100 मीटर लंबी सुरंग निकलती है। यह सुरंग जहां समाप्त

होती है वहां से रंग–बिरंगा पानी निकलता रहता है। अपनी इस विचित्रता के कारण यह जलप्रपात लोगों को एक अनोखे प्राकृतिक सौंदर्य का अहसास कराता है।

रानीदाह जलप्रपात :

यह जलप्रपात जषपुर जिला मुख्यालय से 15 कि.मी. की दूी पर स्थित है। इस जलप्रपात के समीप प्रसिद्घ महाकालेश्वर मंदिर और ऐतिहासिक स्थल पंचमैया होने के कारण इसका धार्मिक महत्व भी है । रानीदाह जलप्रपात जून से फरवरी तक चालू रहता है।

राजपुरी जलप्रपात :–

जषपुर जिले के बगीचा विकासखंड मुख्यालय से तीन कि.मी. की दूरी पर यह जलप्रपात स्थित है । यह बारहमासी जलप्रपात है, इसलिए गरमी के दिनों में इसकी सुंदरता बरकरार रहती है । परंतु बारिष के सीजन में इसका प्राकृतिक सौंदर्य और भी निखर जाता है।

दमेरा जलप्रपात :

जषपुर जिले से आठ किमी. की दूरी पर स्थित श्री नाला पर स्थित है दमेरा जलप्रपात । नैसर्गिक खूबसूरती वाले इस जलप्रपात को निहारने का सबसे अच्छा समय जुलाई से दिसंबर तक है।

कुन्दरू घाघः–

सरगुजा जिले की स्थानीय बोली में जलप्रपात को घाघी कहा जाता है। पिंगला नदी जो तामोर पिंगला अभयारण्य के ह्रदय स्थल से प्रवाहित होती है, इसमें कुदरू घाघ एक मध्य ऊँचाईका सुन्दर जल प्रपात रमकोला से 10 कि.मी.की दूरी पर घने वन के मध्य में स्थित है। यह जल प्रपात दोनों ओर से घने जंगलों से घिरा हुआ है। यह स्थल पारिवारिक वन भोज के लिए मनमोहक, दर्षनीय एवं सुरक्षित सुगम पहुंच योग्य है।

गोडेना जलप्रपात :

पामेड़ अभयारण्य के अंतर्गत यह जलप्रपात कर्रलाझर से 8 कि.मी. की दूरी पर स्थित है । यह स्थान बहुत ही मनोरम एवं एकांत में है, जहां झरने की कलकल ध्वनि पहाड़ से बहती हुई सुनाई देती है । यह जलप्रपात पर्यटकों के लिए पिकनिक मनाने के लिए एक उत्तम स्थान है।

नीलकंठ जलप्रपात बसेरा :–

यह जलप्रपात गुरूघासीदास राश्ट्रीय उद्यान के अंतर्गत सघन वन से घिरा हुआ है यहां लगभग 100 फुट की ऊँचाई से पानी नीचे गिरता है । यहां स्थित विषाल षिवलिंग भी आकर्शण का प्रमुख केन्द्र है।

पवई जलप्रपात :

सेमरसोत अभयारण्य में पवई जलप्रपात चनान नदी पर स्थित है । यह जलप्रपात लगभग 100 फुट से भी ज्यादा ऊँचाई से गिरता इस जल प्रपात को जब पानी ज्यादा आता है तब धुआंधार कहा जाता है । इस स्थान तक पहुंचने के लिए बलरामपुर से जमुआटांड तक वाहन से जाया जा सकता है।

बेनगंगा जलप्रपात कुसमी :

सामरी राज्य मार्ग पर सामरीपाट के जमीरा ग्राम के पूर्व–दिक्षण कोण पर पर्वतीय श्रंष्खला के बीच बेनगंगा नदी का उद्गम् स्थान है । यहां साल वक्षों के समूह में एक षिवलिंग भी स्थापित है । वनवासी लोग इसे सरना का नाम देते हैं और इसे पूजनीय मानते हैं । सरना कुंज के निचले भाग से एक जल स्रोत का उद्गम होता है यह दक्षिण दिषा की ओर बढ़ता हुआ पहाड़ी की विषाल चट्टानों के बीच आकर जलप्रपात का रूप धारण करता है । प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण सघन वनों, चट्टानों को पार करती हुयी वेनगंगा की जलधारा श्रीकोट की ओर प्रवाहित होती है । गंगा दषहरा पर आसपास के ग्रामीण यहां एकत्रित होकर सरना देव एवं देवाधिदेव महादेव की पूजा –अर्चना करने के बाद रात्रि जागरण करते हैं । प्राकृतिक सुशमा से परिपूर्ण यह स्थान पर्यटकों के आकर्शण का केन्द्र है।

भेडिया़ पत्थर जलप्रपात :–

कुसमी चान्दो मार्ग पर तीस कि.मी. की दूरी पर ईदरी ग्राम है । ईदरी ग्राम से तीन. कि. मी. जंगल के बीच भेडिया़ पत्थर जलप्रपात है । यहां भेडिया़ नाला काजल दो पर्वतों के सघन वन के बीच प्रवाहित होता हुआ ईदरी ग्राम के पास करीब दो सौ फुट की ऊँचाई से गिरकर इस जल प्रपात का निर्माण करता है । दो पर्वतों के बीच बहता हुआऐ यह जल प्रपात देखने में एक पुल के समान नजर आता है। इस जल प्रपात के जलकुंड के पास ही एक प्राकृतिक गुफा है, जिसमें पहले भेडिये़ रहा करते थे । यही कारण है कि इस जल प्रपात को भोडिया़ पत्थर जलप्रपात कहा जाता है ।

रानी दहरा :–

कबीरधाम जिला मुख्यालय से जबलपुर मार्ग पर करीब 35 कि.मी. दूरी पर रानी दहरा नामक जलप्रपात भोरमदेव के अंतर्गत आता है । रियासतकाल में यह मनोरम स्थल राजपरिवार के लोगों का प्रमुख मनोरंजन स्थल हुआ करता था। रानीदहरा मैकल पर्वत के आगोस में स्थित है। तीनों ओर पहाड़ों से घिरे इस स्थान पर करीब 90 फुट की ऊंचाई पर स्थित जलप्रपात बर्बस ही लोगों को अपनी ओर आकृश्ट करता है।

सेदम जलप्रपात :

अंबिकापुर–रायगढ़ मार्ग पर अंबिकापुर से 45 कि.मी. की दूरी पर सेदम नामक गांव है । इसके दक्षिण दिषा में दो कि.मी. की दूरी पर पहाडियो़ं के बीच एक खूबसूरत झरना प्रवाहित होता है इसे राम झरना के नाम से जाना जाता है । यहां पर एक षिव मंदिर स्थित है, जहां हर साल षिवरात्रि पर मेला लगता है । इस मनोरम स्थल को देखने सालभर पर्यटक आते हैं।

इकाई –5

छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल, कार्य एवं उपलब्धियां, छत्तीसगढ़ में रामवन गमन पथ

छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल, छत्तीसगढ़ के पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए बना है. यह मंडल होटल और रिसॉर्ट की ऑनलाइन बुकिंग की सुविधा भी देता है। छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल का गठन 18 जनवरी, 2002 को किया गया था। यह मंडल, छत्तीसगढ़ के विभिन्न स्थानों पर होटल और रिसॉर्ट की ऑनलाइन बुकिंग की सुविधा देता है.

छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल, इकोटूरिज्म और साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ष्टूरिज्म ऑन व्हील्सष अभियान चलाता है.। इस अभियान में दुनिया भर से साइकिलिस्ट भाग लेते हैं और छत्तीसगढ़ के अलग–अलग गंतव्यों पर जाते हैं।

छत्तीसगढ़ पर्यटन मंडल के मुख्य कार्य

- पर्यटन को बढ़ावा देना
- राज्य की सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण करना
- राज्य की समषद्धि में विस्तार करना
- पर्यटकों को समष्द्ध अनुभव देना
- स्थानीय और स्वदेषी समुदायों को पर्यटन विकास में षामिल करना
- छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी देना
- छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों की ऑनलाइन बुकिंग की सुविधा देना
- छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों को प्रमोट करना
- टूर एंड ट्रैवल एजेंसियों के साथ मिलकर छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों की बुकिंग कराना
- छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों की संभावनाओं को उभारना
- छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी देने के लिए साउथ एषिया ट्रेवल एंड टूरिज्म एक्सपो में स्टॉल लगाना

छत्तीसगढ़ में पर्यटन का विकास

राज्य निर्माण के बाद से बीते 25 वर्श में छत्तीसगढ़ में पर्यटन के विकास की दिषा में अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। पहले छतीसगढ़ षैषवावस्था में था. उसके बाद वह बड़ा हुआ और अब राज्य पूरी तरह से युवावस्था में आ चुका है. इस दौरान छत्तीसगढ़ का पर्यटन क्षेत्र काफी विस्तारित हुआ है. 25 सालों में छत्तीसगढ़ के पर्यटन ने एक आकार ले लिया है. ताकि

Notes

किस दिषा में आगे बढ़ाना है. इसके साथ ही तीर्थ पर्यटन क्षेत्र में हमें किस तरह से आगे बढ़ना है. मुख्यमंत्री भूपेष बघेल की एक महत्वकांषी योजना है. रामवन गमन पर्यटन परिपथ जिसका कार्य छत्तीसगढ़ टूरिज्म बोर्ड के माध्यम से किया जा रहा है. छत्तीसगढ़ के 9 स्थलों पर पहले चरण में विकास के कार्य किए जा रहे हैं. जिसके अंतर्गत चंदखुरी जिला रायपुर और जांजगीर चांपा जिले का षिवरीनारायण विकसित हो चुका है. उसका लोकार्पण भी हो चुका है. इसी तरह से वॉटर स्पोर्ट्स और एडवेंचर टूरिज्म, इको टूरिज्म होमस्टे, फिल्म टूरिज्म के लिए बहुत सारी चीजें हो रही है. जो छत्तीसगढ़ को निष्चित रूप से नया रूप दे रही है. विष्व के मानचित्र पर छत्तीसगढ़ का बस्तर तो था ही लेकिन छत्तीसगढ़ का समग्र अंचल जषपुर से लेकर बस्तर ने विष्व मानचित्र में एक निष्चित स्थान बना लिया है।

राज्य में आने वाले टूरिस्ट की संख्या 1 करोड़ पर जा रही है. अगर तीर्थ पर्यटन की बात की जाए तो सबसे बड़ा उदाहरण राम वन गमन पर्यटन के अंतर्गत चंदखुरी माता कौषल्या धाम का विकास किया गया है. पहले जहां सप्ताह में 500 –700 की संख्या में लोग जाया करते थे. अब उनकी संख्या 2.50 लाख हो गई है. मंदिर समिति के लोगों ने और गांव के लोगों ने यह बात बताई कि लगातार पर्यटकों का आना जारी है. धार्मिक पर्यटन क्षेत्र में चंदखुरी और षिवरीनारायण में भी 10 गुना पर्यटकों की वषद्धि हुई है. इसके साथ ही राज्य के सभी पर्यटन स्थलों में बढ़ोतरी हुई है।

छत्तीसगढ़ का पहला स्थल विष्व धरोहर की सूची में हुआ षामिल

छत्तीसगढ़ के कांगेर घाटी राश्ट्रीय उद्यान (झटछच) को यूनेस्को की विष्व धरोहर की अस्थायी सूची में प्राकृतिक श्रेणी के अंतर्गत षामिल किया गया है। यूनेस्को द्वारा कांगेर घाटी राश्ट्रीय उद्यान को विष्व धरोहर की सूची में षामिल किया गया है । कांगेर घाटी राश्ट्रीय उद्यान न केवल जैव विविधता के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, बल्कि यह स्थानीय जनजातीय संस्कृति और इको–टूरिज्म को भी बढ़ावा देता है। इस सूची में षामिल होने से बस्तर क्षेत्र को अंतर्राश्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलेगी एवं पर्यटन को और भी बढ़ावा मिलेगा । यह उपलब्धि पूरे छत्तीसगढ़ के लिए गर्व का विशय है ।

उल्लखेनीय है कि यह उद्यान तीन महत्वपूर्ण मापदंडोंकृप्राकृतिक सौंदर्य, भूवैज्ञानिक विषेशताएँ, और जैव विविधता पर खरा उतरता है। कांगेर घाटी राश्ट्रीय उद्यान प्रबंधन द्वारा उद्यान को यूनेस्को की विष्व धरोहर सूची में षामिल करने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ेप्), संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार को प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था, जिसे यूनेस्को द्वारा अपने अस्थाई सूची में चयन किया गया है।

कांगेर घाटी में प्राकृतिक सौंदर्य और अनूठी संरचनाएँ

कांगेर घाटी राश्ट्रीय उद्यान अपने मनमोहक प्राकृतिक दृष्यों, हरी–भरी घाटियों, गहरी खाइयों और झरनों के लिए प्रसिद्ध है। तीरथगढ़ जलप्रपात, जो कांगेर नदी से निकलता है, 150 फीट की ऊंचाई से गिरता हुआ एक अद्भुत दृष्य प्रस्तुत करता है। कांगेर नदी अपने स्वच्छ जल और अनूठी चट्टानी संरचनाओं के कारण महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। इसके अलावा, कोटमसर, कैलाष, दंडक और ऐसी १५ से अधिक गुफाएँ अपने अद्वितीय प्राकृतिक

Notes

स्वरूप और ऐतिहासिक महत्व के कारण देष और विदेष के पर्यटकों और वैज्ञानिकों के लिए विषेश आकर्शण का केंद्र हैं।

भूवैज्ञानिक विषेशताएँ और जैव विविधता

यह उद्यान अपनी भूवैज्ञानिक विविधता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की कार्स्ट संरचनाएँ, चूना पत्थर की गुफाएँ, जल संरचनाएँ और चट्टानी परतें वैज्ञानिकों और षोधकर्ताओं के लिए अध ययन का एक महत्वपूर्ण केंद्र हैं। इस क्षेत्र में भूवैज्ञानिक परिवर्तन देखे जाते हैं। चूना पत्थर की गुफाएँ पर्यटकों के लिए विषेश आकर्शण का केंद्र है ।

जैवविविधता से भरपूर यह उद्यान में विभिन्न वनस्पति, वन्यजीव और विषेश प्रजाति के प्रजातीय पाए जाते हैद्य 963 प्रकार की वनस्पतियाँ, जिनमें 120 फैमिली और 574 प्रजातियाँ षामिल हैं। यहाँ दुर्लभ ऑर्किड की 30 प्रजातियाँ दर्ज की गई हैं। 49 स्तनपायी, 210 पक्षी, 37 सरीसृप, 16 उभयचर, 57 मछलियाँ और 141 तितली प्रजातियाँ है । बस्तर हिल मैना (छत्तीसगढ़ का राज्य पक्षी), ट्रैवणकोर वुल्फ स्नेक, ग्रीन पिट वाइपर, मोंटेन ट्रिंकेट स्नेक जैसी दुर्लभ प्रजातियाँ है ।

बस्तर क्षेत्र में पर्यटन को मिलेगा बढ़ावा

कांगेर घाटी राश्ट्रीय उद्यान बस्तर की समष्द्ध जनजातीय संस्कृति को संरक्षित करता है। यहाँ गोंड और धुरवा जनजातियाँ रहती हैं, जो अपनी पारंपरिक रीति–रिवाजों, नष्त्य, लोकगीतों और त्योहारों के लिए प्रसिद्ध हैं। इस क्षेत्र में स्थानीय आदिवासियों द्वारा हस्तषिल्प कला जैसे बांस षिल्प कलाकृतियाँ विषेश रूप से लोकप्रिय हैं। यहाँ के आदिवासी समुदाय प्रकृति से गहराई से जुड़े हुए हैं और जंगलों से जुड़ी अनेक कहानियाँ और मान्यताएँ पीढ़ियों से चली आ रही हैं। इको–टूरिज्म और साहसिक पर्यटन गतिविधि ायों में जंगल सफारी, बर्ड वॉचिंग, ट्रेकिंग ,कयाकिंग बम्बू राफ्टिंग , कैम्पिंग , होमस्टे , गुफा भ्रमण और फोटोग्राफी के बेहतरीन अवसर मिलते हैं, जिससे यह रोमांचक पर्यटन स्थल बनता है। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक गुफाएँ, वन्यजीव, और सांस्कृतिक विरासत इसे छत्तीसगढ़ के प्रमुख पर्यटन स्थलों में षामिल करते हैं।

पर्यटन स्थलों को प्रमोट करने छत्तीसगढ़ टूरिज्म बोर्ड ने बनाया विषेश स्टॉल

दक्षिण एषिया के सबसे बड़े ट्रैवल एक्सपौ ।ज्ज्म् (साउथ एषिया ट्रेवल एंड टूरिज्म एक्सपो) 2025 में छत्तीसगढ़ टूरिज्म बोर्ड ने अपनी प्रभावषाली उपस्थिति दर्ज कराई है। दिल्ली के यषोभूमि में19 से 21 फरवरी 2025 तक आयोजित इस भव्य आयोजन में छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों को प्रमोट करने के लिए एक विषेश स्टॉल लगाया गया, जिसने देषभर के टूर ऑपरेटर्स, निवेषकों और पर्यटकों का ध्यान आकर्शित किया।

एक्सपो के दौरान छत्तीसगढ़ टूरिज्म बोर्ड ने विभिन्न राज्यों से आए पर्यटन विभाग के अधि ाकारियों और टूर ऑपरेटर्स से मुलाकात की। प्रेजेंटेषन के माध्यम से चित्रकोट जलप्रपात, बारनवापारा अभयारण्य, बस्तर की गुफाएं, सिरपुर, मैनपाट सहित राज्य के प्रमुख पर्यटन स्थलों की जानकारी दी। साथ ही, उन्होंने छत्तीसगढ़ में पर्यटन विकास और निवेष के

Notes

छत्तीसगढ़ में पर्यटन

अवसरों पर भी प्रकाष डाला। छत्तीसगढ़ सरकार पर्यटकों और निवेषकों के लिए अनुकूल माहौल बनाने हेतु कई नई योजनाओं पर कार्य कर रही है।

ॅ ।ज्ज्ज2025 में छत्तीसगढ़ टूरिज्म बोर्ड का स्टॉल एक्सपो के आकर्शण का केंद्र बना रहा, जहां बड़ी संख्या में टूर एंड ट्रैवल एजेंसियों, उद्योग विषेशज्ञों और पर्यटन प्रेमियों ने भाग लिया। एक्सपो में छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों और संभावनाओं को लेकर उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिली, जिससे यह साफ है कि राज्य जल्द ही देष के षीर्श पर्यटन स्थलों में अपनी मजबूत पहचान बनाएगा।

विभिन्न राज्यों के टूर ऑपरेटरर्स और ट्रेवेल एजेंटस नेॅ ।ज्ज्ज (साउथ एषिया ट्रेवल एंड टूरिज्म एक्सपो) के स्टाल में छत्तीसगढ़ टूरिज्म बोर्ड के साथ अपना स्पॉट रजिस्ट्रेषन भी कराया ताकि टूरिज्म बोर्ड की नीतियों के तहत उन्हें टूरिज्म बुकिंग का लाभ मिल सके और दूसरे राज्यों के पर्यटक अधिक से अधिक संख्या में छत्तीसगढ़ के आकर्शक पर्यटन स्थलों का भ्रमण भी कर सकें। इस छोटी सी षुरूवात ने छत्तीसगढ़ टूरिज्म बोर्ड के लिए भविश्य की सार्थक संभावनाओं के द्वार खोले हैं।

पर्यटन के क्षेत्र में जषपुर ले रहा नया रूप

छत्तीसगढ़ का जषपुर जिला सुंदर वादियों और नदी पहाड़ झरना से परिपूर्ण खूबसूरत और समष्द्ध सांस्कृतिक धरोहरों में से एक है अब जिला तेजी से पर्यटकों के आकर्शण का केंद्र बनता जा रहा है। यहां के घने जंगल, पर्वतीय क्षेत्र, और अनोखी आदिवासी संस्कृति ने जषपुर को एक विषेश पहचान दिलाई है। जिला प्रषासन द्वारा पर्यटन के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए विषेश प्रयास किया जा रहा है।

जषपुर की जैव विविधता और प्राकृतिक सौंदर्य के करीब लाना है। इसके तहत पर्यावरण के अनुकूल गतिविधियाँ जैसे, बर्ड वॉचिंग, और प्राकृतिक स्थल भ्रमण आयोजित किए जाते हैं। इन गतिविधियों से पर्यटकों को पर्यावरणीय स्थिरता का भी ज्ञान मिलता है।

एडवेंचर टूरिज्म

रॉक क्लाइम्बिंग, ट्रेकिंग, और नदी के किनारे कैंपिंग जैसी गतिविधियाँ पर्यटकों के लिए रोमांचक अनुभव साबित होती हैं। जषपुर के प्राकृतिक परिदृष्य में आयोजित इन गतिविधियों के जरिए पर्यटक न केवल जषपुर की प्राकृतिक सुंदरता को देख सकते हैं, बल्कि साहसिक खेलों का आनंद भी ले सकते हैं।

जिला प्रषासन द्वारा समष्द्ध सांस्कृतिक धरोहर को प्रस्तुत करने के लिए अनुभवात्मक पर्यटन का प्रारूप तैयार किया है। पर्यटक यहां स्थानीय व्यंजनों का स्वाद, आदिवासी कला और षिल्प वर्कषॉप्स, और पारंपरिक नष्त्य–संगीत का आनंद ले सकते हैं।

स्थानीय समुदाय की भागीदारी और योगदान

स्थानीय समुदाय को रोजगार के अवसर प्रदान कर, सामुदायिक विकास में अपना योगदान देते हैं। स्थानीय गाइड्स, षिल्पकार, और साथ जुड़कर न केवल अपने परिवार की सहायता

करते हैं बल्कि जषपुर की सांस्कृतिक धरोहर को भी संरक्षित करते हैं। इसका उद्देष्य केवल पर्यटकों को आकर्शित करना नहीं है, बल्कि स्थानीय कला और संस्कृति को जीवित रखना भी है। जिला प्रषासन स्थानीय कलाकारों के हस्तषिल्प और पारंपरिक उत्पादों को उनके स्टोर पर प्रदर्षित करता है, जिससे स्थानीय षिल्पकारों को अपनी कला को प्रदर्षित करने का मंच मिलता है। साथ ही, यह स्थानीय उत्पादों का उपयोग करके किसानों और षिल्पकारों को आर्थिक समर्थन प्रदान कर रहा है।

भविश्य की योजनाएँ और नवाचार

आने वाले वर्शों में योजना है कि जषपुर को छत्तीसगढ़ का प्रमुख पर्यटन स्थल बनाया जाए, जहां पर्यटक प्रकृति, रोमांच, और संस्कृति का अनूठा अनुभव प्राप्त कर सकें। पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देते हुए, कार्यक्रमों में इको–फ्रेंडली दृश्टिकोण को षामिल करना मुख्य लक्ष्य है।

दुड़मा वाटरफॉल

छत्तीसगढ़ की प्राकृतिक संपदा में दुड़मा वाटरफॉल ने एक नई पहचान बनाई है। यह स्थल न केवल राज्य के पर्यटन को बढ़ावा दे रहा है, बल्कि स्थानीय लोगों के रोजगार और आजीविका का भी साधन बन रहा है। पर्यटकों के उत्साह और सरकार की पहल से यह स्पश्ट है कि दुड़मा वाटरफॉल छत्तीसगढ़ के पर्यटन मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण स्थल बन चुका है।

छत्तीसगढ़ में रामवन गमन पथ

प्रभु श्रीराम का छत्तीसगढ़ से गहरा नाता रहा है। ऐसी मान्यता है कि त्रेतायुग में छत्तीसगढ़ को दक्षिण कोसल के नाम से जाना जाता था, संभवतः इसी आधार पर श्री राम को कोषलाध ीष कहा जाता है। दक्षिण कोसल को ही श्रीराम का ननिहाल कहा जाता है। प्रभु श्रीराम ने वनवास काल का अधिकांष समय यहीं बिताया इसकी स्मषति चिन्ह भी अनेक स्थानों पर मौजूद हैं। यह भी मान्यता है कि बलौदाबाजार के तुरतुरिया स्थित वाल्मीकि आश्रम में माता सीता ने पुत्र लव और कुष को जन्म दिया था। श्रीराम के पुत्र कुष की राजधानी श्रावस्ती (वर्तमान में सिरपुर, जिला महासमुन्द) में होने के प्रमाण विभिन्न ग्रंथों में मिलते हैं। सिहावा क्षेत्र को सप्तऋशियों की तपोभूमि कहा जाता है। जनश्रुतियों के अनुसार सिहावा के प्राचीन मंदिर कर्णेष्वर मंदिर का संबंध त्रेतायुग से बताया जाता है।

पूरे देष में संभवतः छत्तीसगढ़ ही ऐसा राज्य है जहां लोग अपने भांजे के पैर छूकर प्रणाम करते हैं। कहा जाता है कि दक्षिण कोसल श्रीराम का ननिहाल होने के कारण उन्हें समूचे छत्तीसगढ़ का भांजा माना जाता है और यहां के लोग प्रभु श्री राम को श्रद्धा पूर्वक प्रणाम करते हैं। इसी कारण यहां के लोग अपने भांजे को श्रीराम का स्वरूप मानते हुए प्रणाम करते हैं और यह परिपाटी पूरे प्रदेष में है।

रामचरित मानस के बालकांड, किश्किंधा कांड और अरण्यक कांड में त्रेतायुग के ऋशि मुनियों को सताने वाले, उनके यज्ञ का ध्वंस करने वाले राक्षसों का वर्णन है। वनवास काल में ही इन्हीं राक्षसों का वध प्रभु श्रीराम और लक्ष्मण द्वारा किए जाने का उल्लेख है। तत्कालीन दंडक क्षेत्र वर्तमान में बस्तर संभाग के अधिकांष जिलों में सम्मिलित है।

वनवास के दौरान माता सीता का अपहरण किए जाने के पष्चात उनकी खोज में प्रभु श्रीराम और लक्ष्मण वन में यत्र तत्र भटकते रहे। इसी बीच उनकी भेंट षबरी माता से हुई, जिनके जूठे बेर प्रभु ने ग्रहण किए। षिवरीनारायण मंदिर (जिला जांजगीर) में स्थापित मंदिर में इसके अनेकों प्रमाण उपलब्ध हैं। मंदिर प्रांगण में एक अतिप्राचीन बरगद का पेड़ है जिसके पत्ते आज भी दोना के आकार में मुड़े हुए हैं। ऐसी मान्यता है कि षबरी ने इसी पेड़ के पत्तों से दोना बनाकर प्रभु श्रीराम को जूठे बेर परोसे थे। यहीं समीप के ग्राम खरौद में लक्ष्मणेष्वर मंदिर है जहां राम के अनुज लक्ष्मण ने षक्ति बाण के दुश्प्रभाव से मुक्त होने यहां स्थित प्राचीन षिवलिंग पर चावल के एक लाख साबूत दाने चढ़ाए थे। इसके बाद वे मेघनाथ के द्वारा चलाए गए षक्ति बाण के प्रभाव से पूरी तरह मुक्त हो गए।

सरगुजा की सीताबेंगरा की गुफा को विष्व की सबसे प्राचीनतम नाट्यषाला माना जाता है। इस गुफा का इतिहास प्रभु श्री राम के वनवासकाल से जुड़ा है। कहा जाता है कि वे माता सीता और लक्ष्मण ने वनवास के समय उदयपुर ब्लॉक अंतर्गत रामगढ़ की पहाड़ी और जंगल में समय व्यतीत किया था। रामगढ़ के जंगल में तीन कमरों वाली एक गुफा भी है जिसे सीताबेंगरा के नाम से जाना जाता है। सीताबेंगरा का षाब्दिक अर्थ है सीता माता का निजी कक्ष। भरत मुनि के नाट्यषास्त्र में इस बात का उल्लेख मिलता है कि इस जगह पर विष्व की सबसे प्राचीनतम नाट्यषाला है, जहां पर उस समय लोग नाटकों का यहां मंचन किया करते थे। यह भी मान्यता है कि त्रेता युग में प्रभु श्री राम का खल्लारी (वर्तमान में जिला महासमुन्द) आगमन हुआ था, इस स्थान को द्वापर युग में खलवाटिका नगरी के नाम से जाना जाता था। यह भी मान्यता है कि प्रभु श्रीराम जिस नाव से यहां आए थे, अब वो पत्थर में तब्दील हो चुका है, और वो वैसा का वैसा ही है।

श्रीराम यहां कोरिया से लेकर कोंटा तक 2226 किमी पैदल चले और 12 चातुर्मास किए। प्रदेष के उत्तर में सरगुजा से लेकर दक्षिण के सुकमा तक श्रीराम से जुड़े स्थानों की पूरी श्रृंखला मिलती है, जिनसे लोक आस्थाएं जुड़ी हुई हैं।

1. सीतामढ़ी–हरचौका (कोरिया) : यहां से पहली बार वनवास के दौरान भगवान श्रीराम ने माता सीता के साथ छत्तीसगढ़ में प्रवेष किया था। छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेष की सीमा पर मवई नदी के किनारे सीतामढ़ी–हरचौका स्थित है।

राम वन गमन पर्यटन परिपथ के अंतर्गत 7 करोड़ 45 लाख रुपए की लागत से राम वाटिका और अन्य विकास कार्य कराए गए हैं।

2. रामगढ़ (सरगुजा) : अंबिकापुर से 60 किमी दूर रामगढ़ पर्वत स्थित है। भगवान राम, लक्ष्मण और माता सीता ने यहां वनवास का लंबा समय बिताया था। राम के तापस वेष के

कारण जोगीमारा, सीता के नाम पर सीता बेंगरा और लक्ष्मण के नाम पर लक्ष्मण गुफा भी है।

कहते हैं कि महाकवि कालिदास के मेघदूत में वर्णित रामगिरी पर्वत यही हैं। यहीं बैठकर कालीदास ने अपनी कृति मेघदूत की रचना की थी। विष्व की प्राचीनतम गुफा और नाट्य षाला भी यहां पर स्थित है।

यहां भगवान श्रीराम की विषाल प्रतिमा, रामायण व्याख्या केंद्र, कैफेटेरिया, सियाराम कुटीर, पर्यटक सूचना केन्द्र, नदी तट बनाया गया है।

3. षिवरीनारायण (जांजगीर–चांपा) : मान्यता है कि यहां श्रीराम और लक्ष्मण ने षबरी के जूठे बेर खाए थे। षिवरीनारायण नगर का अस्तित्व हर युग में रहा है। यह नगर मतंग ऋशि का गुरूकुल आश्रम और माता षबरी की साधना स्थली भी रही है। यह महानदी, षिवनाथ और जोंक नदी के त्रिधारा संगम के तट पर स्थित प्राचीन नगर है।

4.तुरतुरिया (बलौदाबाजार) : कसडोल तहसील से 12 किमी दूर तुरतुरिया स्थित है। इसे महर्शि वाल्मीकि का आश्रम और लव–कुष की जन्मस्थली कहा जाता है। यहां सुरंग से होकर एक जलकुंड गिरता है, जिसका निर्माण प्राचीन ईंटों से हुआ है। जिस जगह कुंड में जल गिरता है, वहां गोमुख बनाया गया है।

5. चंदखुरी (रायपुर) : रायपुर जिले के चंदखुरी में एक मात्र कौषल्या मंदिर है। ये दुनिया का एकमात्र मंदिर है, जहां भगवान राम बाल रूप में अपनी माता की गोद में विराजमान हैं।

6.राजिम (गरियाबंद) ' महानदी, पैरी और सोंढूर नदी के संगम राजिम को छत्तीसगढ़ का प्रयाग कहा जाता है। बीजेपी सरकार में यहां राजिम कुंभ का आयोजन होता रहा है। वहीं कांग्रेस ने इसका नाम बदलकर माघी–पुन्नी मेला कर दिया था। मान्यता है कि माता सीता ने यहां कुलेष्वर महादेव की स्थापना की थी।

7. सिहावा (धमतरी) :वनवास के दौरान भगवान राम सिहावा में श्रषंगी ऋशि के अंगीरा आश्रम आए थे। पत्थरों में उनके पद चिन्ह भी हैं। सिहावा धमतरी जिले की एक पर्वत श्रष्ंखला है। यहीं से छत्तीसगढ़ की जीवनदायिनी महानदी का उद्‌गम भी हुआ है। श्रीराम ने वनवास का कुछ समय सिहावा में महानदी के तट पर बिताया था।

8. दलपत सागर (जगलदपुर) : जगदलपुर के प्राचीन दलपत सागर को राम वन गमन पथ के साथ जोड़ा गया है। पिछली सरकार में हुए षोध के मुताबिक दलपत सागर एक बड़े तालाब के रूप में विकसित है और यहां भगवान राम ने कुछ समय बिताया था।9. रामाराम (सुकमा) रू वनवास काल के दौरान भगवान राम रामाराम में ठहरे थे। यहां भू–देवी की पूजा–अर्चना की थी। करीब 500 साल पहले यहां चिटमिट्टिन माता मंदिर स्थापित किया गया। यहां छत्तीसगढ़ का पहला रॉक गार्डन बनाया गया है।

Notes

9. रामाराम (सुकमा) : वनवास काल के दौरान भगवान राम रामाराम में ठहरे थे। यहां भू–देवी की पूजा–अर्चना की थी। करीब 500 साल पहले यहां चिटमिट्टिन माता मंदिर स्थापित किया गया।

इतिहासकारों की माने तो पुराणों में भगवान राम से जुड़े 75 स्थल छत्तीसगढ़ में बताये जाते हैं। यहां बनी गुफा में रामायण के जीवंत चित्र उकेरे गए हैं।

छत्तीसगढ़ का पर्यटन विभाग राम वनगमन पथ में 20 नए स्थल षामिल किए जाने की तैयारी में जुट गया है। विभाग स्थलों को चिह्नित कर उनके विकास की नई कार्ययोजना तैयार कर रहा है। इन स्थलों में ज्यादातर लोक मान्यताओं पर आधारित हैं। जंगलों के बीचों–बीच और नदी के किनारे स्थित प्राचीन स्थलों को भी योजना में षामिल करने की संभावना है।पर्यटन विभाग के अनुसार वनगमन पथ में रायगढ़)कोरबा) धमतरी और बस्तर में कई ऐसे स्थल हैं जिन्हें षामिल नहीं किया गया था। पर्यटन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि वर्तमान में प्रदेष के ऐतिहासिक पुरातात्विक स्थलों को चिह्नित किया जा रहा है। जंगल और नदी किनारे स्थित स्थलों को पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विकसित किया जाएगा।

MATS UNIVERSITY

MATS CENTER FOR OPEN & DISTANCE EDUCATION

UNIVERSITY CAMPUS : Aarang Kharora Highway, Aarang, Raipur, CG, 493 441

RAIPUR CAMPUS: MATS Tower, Pandri, Raipur, CG, 492 002

T : 0771 4078994, 95, 96, 98 M : 9109951184, 9755199381 Toll Free : 1800 123 819999

eMail : admissions@matsuniversity.ac.in Website : www.matsodl.com